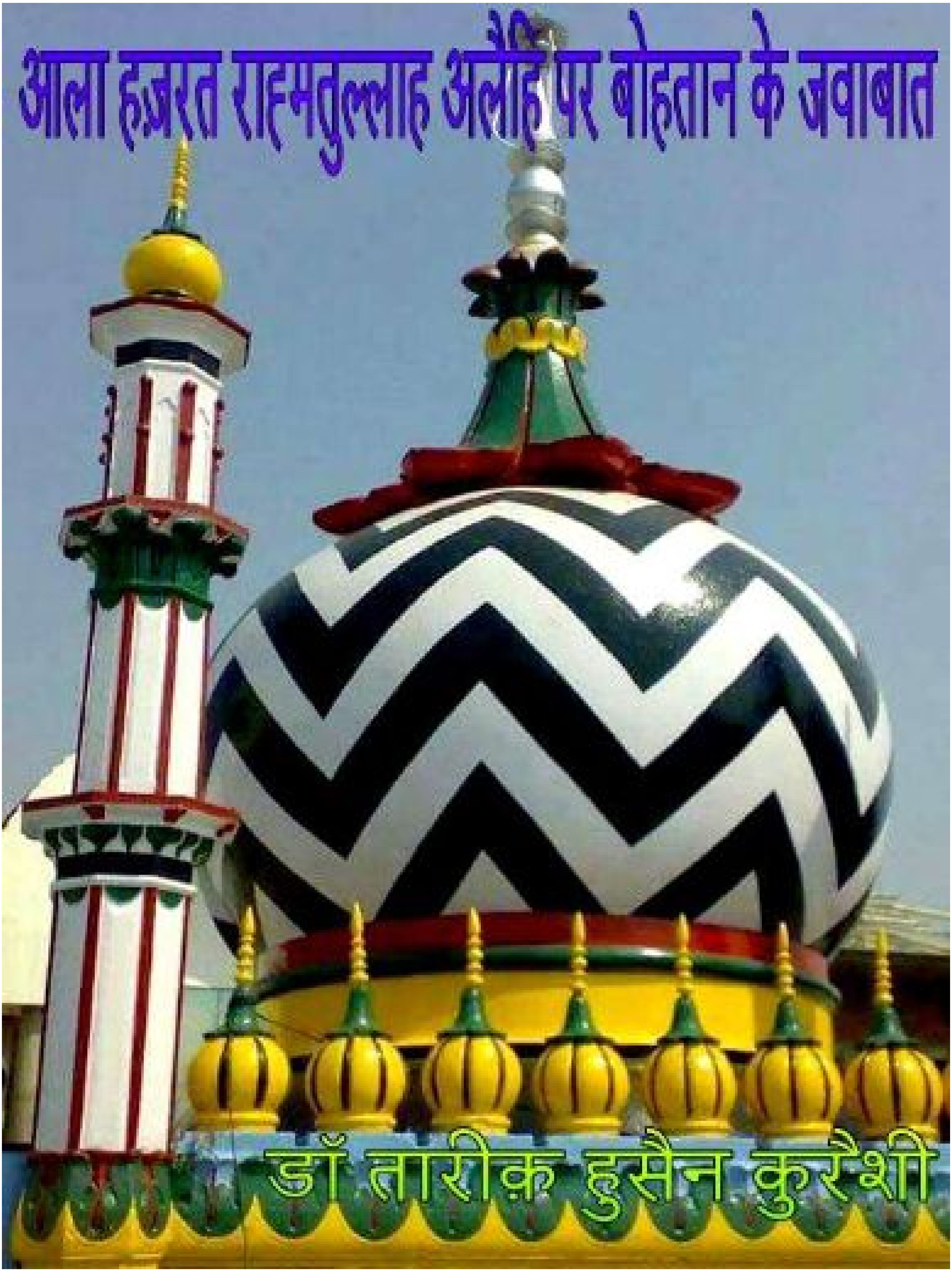

Scanned by CamScanner

وَلَا تَلۡبِسُوا
الۡحَقَّ بِالۡبٰطِلِ
وَتَكۡتُمُوا
الۡحَقَّ وَاَنۡتُمۡ
تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۲﴾

اور حق سے
باطل کو نہ
ملاؤ اور دیدہ و
دانستہ حق نہ
چھپاؤ

Scanned by CamScanner

तमाम बिरादराने अहले सुन्नत वल जमाअत के सच्चे पक्के सुन्नी सहिउल अक़ीदह भाईयों को फकीर डॉ तारीक़ हुसैन की जानिब से अस्सलाम ओ अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु। सोशल मीडिया के इस दौर में एक बहुत ही ज़लील चीज़ सबसे तेज़ी से फेली है जो है झूठ। ओलमा ए हक़ पर झूठे इलज़ाम लगा कर अवाम को ओलमाओ से दूर करने की एक बहुत बड़ी साज़िश इस दौर में रवा है जिस की वजह से कई कम इल्म हज़रात जिनको किताबो से वाबस्तगी कभी उर्दू न आने की बुनियाद पर तो कभी ज़हनों फ़िक्र की तंगी की बुनियाद पर अवाम ए अहले सुन्नत को किताबत से दूर कर देती है जिसका फायेदा सीधा बदमज़हबो को मिलता है सोशल मीडिया के ज़रिये अवाम को ओलमाए हक़ पर झूठ और बदगुमानी के ज़रिये, धोके बाज़ी और मंतिक के ज़रिये, झूठे इलज़ाम आइद कर नोजवानो को बरगला कर अपने जालों में फांसने का काम कर रहे है। और कई हद तक वह अपने इस मिशन में कामियाब भी हुवे है।

Scanned by CamScanner

इसी जीमन में सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर भी कई झूठे, फरेबकारियो भरे मन्तिकी इलज़ाम आइद कर अवाम को धोका दिया जाता है। बारहा इनका जवाब हमारे ओलमा इकराम देते रहे है लेकिन कुछ कुछ वक्फे में ऐसे इल्जामो को दोहरा कर अवाम को बरगलाने का काम जारी व सारी है।
इन्ही इल्ज़ामात में से कुछ इल्ज़ामात के जवाबात फ़क़ीर ने किताबो और ओलमाओ की तकरीरों के ज़रिये अगज़ किये है जिन्हें आपके हवाले कर रहा हूँ इनमे किसी भी तरह की कमी बेशी, या कोई खताए लाफ़ज़ी या तहरीरी हो तो अल्लाह ताला से दुवा है इस फ़क़ीर को मुआफ़ फ़रमाए। तमाम मेरे अज़ीज़ों से मोअद्दाबाना गुज़ारिश है फ़क़ीर को अपनी दुवाओं से नवाज़े।

फ़क़ीर डॉ तारीक़ हुसैन कुरैशी
आज़ाद नगर इंदौर म.प्र.

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत पर इलज़ाम के जवाब

शब बाशी वाले ऐतराज़ का जवाब

अक्सर वहाबी सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि की अल मलफूज़ शरीफ की एक इबारत भोले भाले और कुछ कम इल्म लोगों को दिखा कर बहकाते रहते है आईय्ये आज इस पर कुछ रौशनी डालें।

ऐतराज़:-

नबी अलैहिस्सलाम की अज़वाज क़ब्र में पेश की जाती है और वह (नबी अलैहिस्सलाम) उनसे शब बाशी यानि मुबाशिरत फरमाते हैं (मलफुज़ात ए आला हज़रत, इलज़ाम देवबंदी)

अक्सर यही ऐतराज़ पेश किया जाता है जिसका जवाब कई बार दिया जा चूका है लेकिन मुनाफ़ीक़ो की तरह बार बार यही दोहराया जाता है चलिए आज इस पर कुछ रौशनी डाले।

दर असल मलफुज़ात की इबारत को बड़ी ही मुनाफ़िक़त के साथ तोड़ मरोड़ कर यहाँ

Scanned by CamScanner

पेश किया गया है, असल इबारत यूँ है-
सैय्यद अब्दुल बाक़ी ज़ुर्क़ानी फरमाते हैं की अम्बिया अलैहिस्सलातो वस्सलाम की क़ब्र मुताहिरह में अज़वाज ए मुताहिरात पेश की जाती हैं वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं

(मलफुज़ात ए आला हज़रत हिस्सा सोम)

यहाँ ये बात साफ़ ज़ाहिर हो रही है की मलफुज़ात आला हज़रत में शब बाशी का लफ्ज़ कही मौजूद नहीं, न ही ये इबारत सरकार आल हज़रत ने खुद से लिखी बल्कि अल्लामा ज़ुर्क़ानी रहमतुल्लाह अलैहि की इबारत नक़ल की है जो शराह ज़ुर्क़ानी जिल्द 6 से नक़ल किया है खेर इस पर मजीद ताज़्कीरा करने से पहले कुछ अ हदीस ए मुबारका आपके ज़हनों के हवाले करता हूँ,

नबी अलैहिस्सलाम से मरवी है आप अलैहिस्सलाम ने अपनी अज़वाज मुताहिरात से फ़रमाया तुम में बरज़ख में सबसे पहले मुझसे वो इल्हाक व मिलाप करेगी जिसका हाथ सदक़ा व खेरात में सबसे लंबा होगा

Scanned by CamScanner

(मिश्क़ात शरीफ सफा 165, मुस्लिम शरीफ हदीस नं 6316, बुखारी शरीफ हदीस नं 1420)

ये देखिये खुद रसूले अकरम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम इरशाद फार्मा रहे है की तुम में से (अज़वाज ए मुताहिरात से) सबसे पहले मुझसे बरज़ख में वो मिलाप करेगी, कहो अब हदीस ए मुबारक़ और जिनका क़ोल ए मुबारक़ हे माज़ अल्लाह उन पर क्या हुक्म लगाओगे?
हज़रत ए अनस रदियल्लाहो अन्हो से मरवि है रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया शब ए मेराज सुर्ख टीले के पास मेरा हज़रत ए मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़र हुवा और वह अपनी क़ब्र मुबारक़ में खड़े नमाज़ अदा फरमा रहे थे
(मुस्लिम शरीफ जिल्द 2)

ये तो सिर्फ 2 अ हदीस मुबारक़ नक़ल की गयी वरना ऐसी कई अ हदीस ए मुबारक़ हयात ए अम्बिया के लिए दर्ज है दर असल बात ये है की इनके पेशवा (इस्माईल) अपनी किताब

Scanned by CamScanner

(तफवीयतुल ईमान) में लिख गए की माज़ अल्लाह रसूलुल्लाह ने कहा में भी एक दिन मर कर मिट्टी में मिल जाऊंगा। जबकि ये क़ोल रसूलुल्लाह का कही मौजूद नहीं, इनका पूरा अक़ीदा ही क़ुरआन व हदीस ए मुबारक़ के मुखालिफ है जिसकी धज्जियाँ मलफ़ूज़ शरीफ के इस इबारत से उड़ जाती है।

मलफुज़ात ए आला हज़रत में एक सवाल के जवाब में ये इबारत नक़ल फ़रमाई सवाल कुछ इस तरह है

अम्बिया अलैहिस्सलातो सलाम और औलिया इकराम की हयात ए बर्ज़खीया में क्या फ़र्क़ है?

इसके जवाब में सरकार आला हज़रत ने इस इबारत को शरह ज़ुर्क़निी जिल्द 6 से नक़ल किया अब मलफुज़ात के इस वाकिये पर और इनके ऐतराज़ पर कुछ नज़र डालें-

मलफुज़ात में ये वाकिया अम्बिया अलैहिस्सलाम और औलिया इकराम की हयात ए बर्ज़खी को साबित करने के लिए नक़ल किया जबकि वहाबी अंबिया इकराम की बर्ज़खी ज़िन्दगी के मुनकिर हैं इसी लिए

Scanned by CamScanner

तफवियतुल इमान में ये लिखते है की नबी अलैहिस्सलाम अपनी बेटी की भी मदद नहीं कर पाएँगे माज़ अल्लाह ईसी लिए झुठे बोहतान बाँध कर अवाम को गुमराह करने का काम अंजाम देते हैं आईय्ये इनके झूठ का परदा खोलें-

झूटों पर अल्लाह की लानत
क़ुरआन ए मजीद

इनके पेश करदा इबारत में झूठ का पर्दा फाश
झूठ नं 1
1) इनका इलज़ाम की सरकार आला हज़रत ने ये कहा, अवाम को झूठ और फरेब देने के सिवा कुछ नहीं क्योंकि मलफुज़ात की असल इबारत में साफ़ लिखा है सय्यदि अब्दुल बाक़ी ज़ुर्क़ानी फरमाते है यहाँ ये बात साफ़ हो जाती है की अल्लामा ज़ुर्क़ानी रहमतुल्लाह अलैहि से ये क़ोल नक़ल किया है और इल्म ए मुनाज़रे का उसूल है की नक़ल करने वाला किसी बात का ज़िम्मेदार नहीं होता। उससे सिर्फ हवाला

Scanned by CamScanner

तलब किया जाता है

झूठ नं 2

2) मलफुज़ात ए आला हज़रत की असल इबारत में कहीं भी लफ्ज़ मुबाशिरत या हम बिस्तारी या सोहबत नहीं है जबकि ये अवाम को धोका देना है की लफ़्ज़ शब बाशी को इन्होंने मुबाशिरत कह कर अवाम को धोका दिया जबकि शब बाशी का माना लुगत में रात गुज़ारने के होते हैं जैसे इबादत में शब बाशी फरमान यानि इबादत में रात गुज़ारना।

झूठ 3

3) इस क़ोल को इन्होंने गुस्ताखी फ़रमाया अगर बिल फ़र्ज़ बक़ोल इनके इस क़ोल से मुराद सोहबत है तो जो फ़ैल मोमिन की हयात ए ज़ाहिरी में या जन्नत में जो हूरें या कुछ मोमिनो को उनकी बीबियां मिलेंगी तो उनके साथ ये अमल गुस्ताखी या गुनाह नहीं तो फिर बर्ज़खी ज़िन्दगी में ये अमल कैसे गुस्ताखी हो गया? इस क़ोल पर गुस्ताखी की निसबत कर इन्होंने हदीस ए मुबारका और अल्लामा ज़ुर्क़ानी रहमतुल्लाह अलैहि पर इस हुक्म की

Scanned by CamScanner

निसबत की अब ये अपने ईमान की खेर मनाए।
इस इबारत में इन नाम निहाद लोगों ने ये ऐतराज़ उठाया की देखो अम्बिया अलैहिस्सलाम की शान में कितनी बड़ी गुस्ताखी है और शब बाशी का माना इन्होंने मुबाशिरत लिया है, चलिए इनके इस मायने को भी तस्लीम करते हुवे बक़ोल इनके

1) अगर ये न पसंदीदा व गुस्ताखाना बात है तो मुझे बताएं क्या रुए ज़मीन पर कोई एक आलिम बताओ जो कहता हो हयात ए दुनिया में जो काम न पसंदीदा या गुस्ताखाना न हो वो बादअल मौत फिर ज़िंदा किये जाने पर कैसे गुस्ताखी हुवा?

2) अगर ये फ़ैल बरज़ख में गुस्ताखाना है जबकि अम्बिया तो अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं जो नमाज़ भी अदा करते हैं और रोज़ी भी दिए जाते है, उनका मीरास (माल) तक़सीम नहीं किया जाता उनकी बीवियों को दुसरे निकाह की इजाज़त नहीं क्योंकि उनकी रूह उनके जिस्म

Scanned by CamScanner

में लोटा दी जाती है, तो क्या शरीयत में उन पर पाबन्दी हो गयी के तुम ये फ़ैल नहीं कर सकते इसका सबूत पेश करें।

3) जब ये फ़ैल इनके नज़दीक क़ब्र में न पसंदीदा है हलाकि वह क़ब्र इतनी वसी है जिसकी कोई हद्द हमारी अक़्ल तसव्वुर नहीं कर सकती तो जन्नत में जो हूरें और कुछ मर्दों को उनकी औरतें मिलेंगीं जो अपने खविंदों के साथ रहेंगी तो जन्नत में इस फ़ैल को अंजाम देने वाला कहाँ जाएगा?

असल मसला ये है की अवाम से अपने कुफ़्रिया अक़ीदों की पर्दा पोशी करना है इसी बिना पर झूठे और बे बुनियाद इलज़ाम लगाकर लोगो को धोका दिया जाता है आखिर में हयात ए अम्बिया पर ओलमा ए क़दीम के कुछ अक़वाल पेश ए नज़र हैं

हाफ़िज़ शहाब उद्दीन अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन अबु बक़रबिन अब्दुल मलक बिन अहमद बिन मुहम्मद बिन हुसैन बिन अली क़स्तालानि मिस्री शाफ़ई अलैहिर्रहमा, इमाम,

Scanned by CamScanner

अल्लामा, हुज्जत फ़ुक़ह हैं आपने अपनी किताब "अल मवाहिब ला दुनिया" में ये इबारत लिखी के-

इमाम सुबकी ने अपनी किताब तबक़ात में इब्न ए फोरक से नक़ल फ़रमाया के बे शक हुज़ूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी क़ब्र मुबारक में ज़िंदा हैं, और आप हमेशा हमेशा के लिए अल्लाह के रसूल हैं और ये बात हकीकतन है नाकि मिजाज़न"

इस पर अल्लामा ज़ुर्क़नी ने शरह में लिखा की "तमाम ज़मानों में और ये सादिक़| है आपकी वफ़ात मुबारक़ के बाद क़यामत के कायम होने तक, आगे लिखते हैं क्योंकि रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़िंदा है अपनी क़ब्र मुबारक़ में इसमें नमाज़ अदा फरमाते हैं अज़ान व इक़ामत के साथ।

आगे लिखते हैं-

"इब्ने अक़ील हनबलि ने फ़रमाया के आप सलल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी अज़वाज ए पाक से मुलाकात फरमाते है और बदर्जे अकमल इनसे इस्तिमता फरमाते हैं और ये

Scanned by CamScanner

बात इन्होंने हल्फिया कही और यही ज़ाहिर और इससे कोई माने भी नहीं हैं।
(शराह उल अलामत अल ज़ुर्क़नी 1122, अल मावाहिब ला दुनिया अल मुहम्मदिया, लिल अलामतुल क़स्तालानि अल मुतवाफी 922, जिल्द 8)

वाक़ई ये मुनाफ़िक़त ही है जिस पर ये वहाबी अपनी दगाबाजी से उस मुक़द्दस ताल्लुक़ात जिसे क़ुरआन ए मजीद ने यु फरमाया-
"वह तुम्हारे लिबास हैं तुम उनके लिबास"
(सूरह बक़र आयत नं187)
मुनाफ़िक़त भी किन अज़ीम ज़ात के साथ अल्लाह हुअक़बर जिन्हें क़ुरआन ए मजीद ने इरशाद फ़रमाया'
"ये नबी मूसलमानो का उनकी जान से ज़्यादा मालिक है, और उसकी बीबियां उनकी माँए हैं"
"सूरह अल अहज़ाब आयत नं 6"

अल्लाह ताला ऐसे झुठे मुनाफ़िक़ों से हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फरमाए। और सच्चों के बुग्ज़ से महफूज़ फरमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर एक ऐतराज़ का जवाब

क्या अला हज़रत मुजद्दिद दीनो मिल्लत अशशाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल ए बरेलवी के उस्ताद क़ादियानी कज़्ज़ाब के भाई थे?

जहाँ सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर कई झुटे और बे बुनियाद इल्ज़ामात लगाये जाते है उन्ही में से एक ऐतराज़ ये भी है की आपके एक उस्ताद गुलाम क़ादियानी कज़्ज़ाब के भाई थे। हवाला समात फरमाए।
तर्जुमा:- यहां ये बात क़ाबिल ए ज़िक्र है की उनका उस्ताद मिर्ज़ा गुलाम क़दर बैग, मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी का भाई था।
(मुरत्तिब अहसान इलाही ज़हीर, किताब अल बरेलवियत(उर्दू) सफा 20)

बरैलविया के बानी का पहला उस्ताज़ मिर्ज़ा गुलाम क़दर बैग, मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी का भाई था, लिहाज़ा ये कहा जा

Scanned by CamScanner

सकता है की क़ादियानीयत और बरेलवियत दोनों इस्तेमार की खिदमत में भाई भाई हैं (अलबरैलवियत, अरबी मतबुआ लाहोर, सफा 4, अतिया मुहम्मद सलीम)

इस पर गुफ्तगू करने से पहले क़ुरआन ए मजीद की दो आयतों का तर्जुमा पेश करना चाहूँगा।

झूटो पर अल्लाह की लानत

(सूरह आले इमरान)

और मजीद फरमाता है-

वो लोग जो चाहते हैं मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिए दर्द नाक अज़ाब है दुनिया और आख़िरत में,और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते

(सूरह नूर आयत 19)

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर ये खुला बोहतान लगाने वाले ज़रा अपनी आख़िरत की खेर मनाएं, आईय्ये ज़रा इस बोहतान का जायज़ा लें-

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि के एक उस्ताद जिनसे आपने इब्तिदाई तालीम ली उनका नाम मिर्ज़ा गुलाम क़ादर बैग था।

Scanned by CamScanner

इन्होंने सरकार आला हज़रत को इब्तिदाई सर्फ़ नो की किताबें पढ़ाई लेकिन एक वक़्त वह आया जब आपका कोई मसला रुक जाता तो आप (मिर्ज़ा गुलाम क़दर बैग) सरकार आला हज़रत से पूछते। चुनाचे आपने एक मसला सरकार आला हज़रत से दरयाफ़्त फ़रमाया तो सरकार आला हज़रत ने एक किताब लिखी जिसका नाम तजल्लियुल यकीन बे अन्ना नबिय्यना सय्यिदिल मुरसलीन है इसी में आपकी ज़िन्दगी (मिर्ज़ा गुलाम क़ादर बैग)के कुछ हालात लिखे हैं। जिसमे एक सवाल के जवाब में सरकार आला हज़रत लिखते हैं मसला दरियाफ्त करने वाले बुज़ुर्ग मौलाना हकीम मिर्ज़ा गुलाम क़ादर बैग इब्ने मिर्ज़ा हसन जान बैग लखनवी आला हज़रत के इब्तिदाई असातज़ा से हैं। आप 25 जुलाई 1847 में लखनऊ में पैदा हुवे, वालिद ए माजिद लखनऊ से बरेली आ गए, और किलै नज़द बरेली की जामा मस्जिद में मुस्तकिल क़याम फ़रमाया। आपका घर अब तक बरेली शरीफ में मौजूद हे आपका खानदान ईरान से

Scanned by CamScanner

हिन्दुस्तान आया और मुगलिया हुकूमत में फ़ोजी फराईज़ सर अंजाम देने लगा। इन्हें मिर्ज़ा और बैग जैसे खिताब से नवाज़ा गया। मिर्ज़ा गुलाम क़ादर बैग के भाई मिर्ज़ा मुति उल्लाह बैग जब जामा मस्जिद के मुतवल्ली बने तो आपने ऐलान किया की अब मस्जिद के पास इमाम बड़े पर सियाह झंडा अलम नहीं लहराएगा।
(तजल्लियाते यकीन बे अन्ना नबिय्यना सैय्यिदिल मुरसलीन)

यहाँ गोर करने वाला मक़ाम है की आपके उस्ताद मिर्ज़ा गुलाम क़ादर बैग के वालिदे माजीद और आप खुद लखनऊ के थे जबकि क़ादियानी क़ादियान का था। आपके उस्ताद के वालिद का नाम मिर्ज़ा हसन जान बैग और भाई का नाम मिर्ज़ा मुति उल्लाह बैग था। अब आईय्ये क़ादियानी का नसब नामा उसकी किताब से जानें-
मोलवी रफ़ीक़ दिलावरी लिखता है:-
मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा ने 1876 में इसी साल के

Scanned by CamScanner

शुरू में दुनियाए रफ्तनी व गुज़श्तनि को अलविदा कहा, उनकी सबसे बड़ी औलाद मुराद बी बी थीं, जिनकी शादी मिर्ज़ा अहमद बैग होशियार पुरी के भाई मिर्ज़ा अहमद बैग यानि बेगम ताल उमर हा के हक़ीक़ी चाचा से हुई थी, इनसे छोटे गुलाम क़ादर थे, जिन्होंने अपनी हयात मुस्तआर के 55 साल ते करके 1883 में सफर ए आखरी किया, इनसे शाहिद जन्नत नाम से एक लड़की थी, और सबसे छोटे मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब थे।
(सीरतुल मेहदी)

क़ादियानीयों ही की किताब से दज्जाल का पूरा नसब नामा पेश है जिसमे उसके वालिद का नाम और ये बात साफ़ ज़ाहिर होती है की किस तरह सिर्फ नाम की मुशाबेहत की बिना पर एक सच्चे पक्के मुस्लमान को न सिर्फ दज्जाल का भाई बताया गया बल्कि उस इलज़ाम की बिना पे एक सच्चे आशिक़ ए रसूल के ऊपर तोहमत बंधी गयी।

Scanned by CamScanner

खुलासा ए हाल

1) क़ादियानी के बाप का नाम मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा था जबकि सरकार आला हज़रत के उस्ताद के वालिद का नाम मिर्ज़ा हसन जान बैग था।
2) क़ादियानी की पैदाइश क़ादियान में हुई, जबकि आला हज़रत के उस्ताद की पैदाइश बल्कि आपके वालिद गिरामी का भी रहना लखनऊ का है जिनका क़ादियान से दूर दूर तक कोई वास्ता नहीं।

3) आपके भाई मिर्ज़ा मुति उल्लाह बैग जो जामा मस्जिद बरेली शरीफ के इमाम थे, जबकि क़ादियानी का भाई कभी बरेली शरीफ की जामा मस्जिद का इमाम नहीं रहा।
 अफ़सोस सद अफ़सोस बुग्ज़ो हसद की बिना पर इस क़द्र बोहतान बाँधा की क़ुरआन ए मजीद की उस आयत के मिसदाक बने जिसमे अल्लाह की लानत हो रही है, अगर तुम्हारे इलज़ाम की बिना पर तुमने सरकार आला

Scanned by CamScanner

हज़रत के मानने वालों पर क़ादियानी होने का इलज़ाम लगाया ज़रा अपने घर में झाँक लेते। नज़ीर हुसैन (गैर मुक़ल्लिदो का इमाम)ने मिर्ज़ा क़ादियानी का निकाह पढ़ाया

(हयात ए तय्यब पेज 76)

अब्दुल क़ादिर देवबंदी क़ादियानी इमाम की इक्तिदा में नमाज़ भी पढ़ते थे

(सवानेह अब्दुल क़ादिर रायपुरी पेज 38)

अब बताओ कोन किसका भाई है? अब अगर हम आपके फतवे के मुताबिक आपको क़ादियानी का भाई कहें तो क्या बुरा है।

अल्लाह ताला ऐसे क़ज़्ज़ाबों से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार अला हज़रत पर इल्ज़ाम का जवाब

अंग्रेज़ो का एजेंट इलज़ाम का जवाब

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िल ए बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि के एक फतवे पर उठने वाले ऐतराज़ का जवाब पेशे नज़र है, जिसकी बिना पर आपको अंग्रेजों का एजेंट होंने का झूठा इलज़ाम बाँधा जाता है। आईय्ये पहले इनके ऐतराज़ को देखे फिर इस पर तफसीरा करें।

ऐतराज़:-

मौलाना अहमद रज़ा ने अंग्रेजी दौर में हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम कहा, इसलिए ये तास्सुर मिलता है की वह अंग्रेजों के एजेंट थे!

सरकार आला हज़रत ने 1888 में एक इस्तिफ्ता के जवाब में एक रिसाला शये किया जो आपके विसाल के 6 साल बाद 24 मार्च 1927 को शये हुवा। कोई बेवक़ूफ़ ही होगा जो

Scanned by CamScanner

कहेगा की हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम बताने के पीछे अंग्रेजों की खुश नुदि हासिल करना मक़सद था, अगर अंग्रेजों को खुश करना मक़सूद होता तो आपकी हयात ही में ये रिसाला शये होता नाकि आपके विसाल के 6 साल बाद।

हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम क़रार देना इस बात की रोशन दलील है की हमने यानि मुसलमानो ने अंग्रेज़ों का जबरन क़ब्ज़ा क़ुबूल नहीं किया और जिस जगह पर वह क़ाबिज़ थे वह जगह मुसलमानो ही की है और उसके लिए जद्दो जहद कर वापिस हासिल किया जाए। और अंग्रेज़ों व हिन्दू में से किसी की भी हुकूमत क़ुबूल न की जाए।

अब बात करते है हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम बताने पर, तो ये बात सरकार आला हज़रत ने अपनी खुद्की जानिब से नहीं कही बल्कि हनफ़ी मज़हब के मुताबिक बल्कि आईम्माए सलासा के मुताबिक आपने उस सुवाल का जवाब दिया। आईय्ये इस पर कुछ

Scanned by CamScanner

रौशनी डाले।

सरकार आला हज़रत से सुवाल हुवा की हिंदुस्तान दारुल हरब है या दारुल इस्लाम? इसके जवाब में आपने फ़रमाया:-

हमारे इमाम, इमाम ए आज़म अबु हनीफा बल्कि ओलमाए सलासा रहमतुल्लाह ताला अलैहिम के मज़हब पर हिन्दुस्तान दारुल इस्लाम है, दारुल हरब नहीं। दारुल इस्लाम के दारुल हरब हो जाने में 3 बातें हमारे इमाम इमामुल आइम्मा रदियल्लाहो ताला अन्हो के नज़दीक दरकार है उनमे से एक ये है के वहां अहकाम ए शिर्क ऐलानिया जरी हों और शरीयत ए इस्लामी के एहकाम मुतलकन जरी न होने पाये और साहिबेन के नज़दीक भी इसी क़द्र काफी है, मगर बी हमदिल्लाह यहाँ कत अन मौजूद नहीं, अहले इस्लाम जुमा, ईदैन, अज़ान व इक़ामत,नमाज़ ब जमाअत, बगैर मुज़म्मत अलल ऐलान अदा करते हैं, फराईज़ निकाह, रिज़ा, तलाक़, इद्दत, रुजअत, मेहर,

Scanned by CamScanner

खुलाअ, निफ़क़ात, हिज़ानत, नसब हिबा, वसफ, वसीयत वगैरह बहुत मुआमलात ए मुस्लेमीन हमारी शरीयत के मुताबिक फैसले होते हैं की इन उमूर में हज़रात ओलमा से फतवा लेना और उसी पर अमल व हुक्म करना हुक्काम अंग्रेजी को भी ज़रूरी होता है अगरचे हुनूद, मजूस, नसारा हो और बिहमदिल्लाह ये भी शौकत व जबरूत शरिअत अलै अला ए इस्लामिया अल्लाह ताला हुक्मूल सामिया हे के मुखालफीन को भी अपनी तस्लीम इत्तिबा पर मजबूर फरमाती है, वल हमदुलिल्लाह ए रब्बिल आलमीन।

फतवा आलम गिरी में है:-

जानलो के दारुल हरब एक ही शर्त से दारुल इस्लाम बन जाता है वो ये के उसमे इस्लाम का हुक्म ग़ालिब आ जाये। (फतावा हिन्दीया, किताबुल सैर, बाबा अलखामिस फि इस्तीला अलकुफ्र, जिल्द 2 सफा 232)

Scanned by CamScanner

शरह नकाया में है:-

बिला इख़्तिलाफ़ दारुल हरब वहाँ बाज़ अहकाम ए इस्लाम से वह दारुल इस्लाम बन जाता है
(जामेअ अल रमूज़, किताब अल जिहाद,जिल्द 4,)

शेखुल इस्लाम और इमाम अस्बेजाबि ने फरमाया किसी भी इलाक़ा में कोई एक इस्लामी हुक्म भी बाक़ी हो तो उस इलाके को दारुल इस्लाम कहा जायेगा।
(जामेअ अल रमूज़ किताब अल जिहाद, जिल्द 4)

इमाम ए अबु हनीफा रदियल्लाहो अन्हो के कौल और फतावा आलम गिरी की इस इबारत को बा गौर समझिये, इमाम ए आज़म ने दारुल हरब की जो शर्त बयान फारमाई उसके मुताबिक जहाँ हुक्म ए शिर्क अलल ऐलान नाफ़िज़ हो यानि हर किसी को शिर्क करने के

Scanned by CamScanner

लिए मजबूर किया जाये और एहकाम ए शरीयत मुतलकन जरी न होने पाए, यानि मुसलमानों के ज़रूरी मसाइल जैसे नमाज़ रोज़ा हज्ज ज़कात निकाह तलाक वगैरह न सिर्फ शरीयत के मुताबिक होने पर पाबंदी हो बल्कि इन्हें अंजाम ही न देने पाए।

दूसरी तरफ फतावा आलम गिरी के मुताबिक़ दारुल हरब में जब एक ही शर्त से दारुल इस्लाम बन जाता है वह ये है की वहां इस्लाम का हुक्म ग़ालिब हो जाए। अब जब इस्लामी हुक्म ग़ालिब हो चूका उसके बाद न तो मुसलमानो को उनके ज़रूरी मसाइल हल करने के लिए शरीयत की पाबन्दी से रोका गया न ही उन्हें जबरन उनके मज़हब से हटाया जा रहा है न ही उन पर हुक्म ए शरा की पाबन्दी से रोका गया जब हुक्म ए दारुल इस्लाम लागु हुवा और उसके बाद इस हुक़्म की इल्लत ख़त्म करने की कोई सूरत पैदा नहीं हुई तो फिर क्यों कर इल्म होने के बाद झूठा फतवा दिया जाता। बिला शुबा जब हिंदुस्तान दारुल इस्लाम है तो इसे दारुल इस्लाम ही

Scanned by CamScanner

कहा जायेगा न की दारुल हरब।
जामे अल रमूज़ के इस हवाले से पूरी बात साफ़ हो जाती है की जब इस्लाम का एक हुक्म भी बाकी रहेगा तब तक उस पर हुक्म ए दारुल हरब नहीं लगेगा। अब ये सारी बातो का इल्म होने के बाद भी हिन्दुस्तान को दारुल हरब कोई जाहिल और फितना परवर ही कहेगा।
अब इस पर ये एतराज़ करना की अंग्रेज़ों से मुहब्बत में ये फतवा दिया ये भी सिर्फ तकिया बाज़ी से ज़्यादा कुछ नहीं। क्योंकी इसी फतवे में उस वक़्त के दौर के मुताबिक़ फतवे की आखिर में बता दिया गया की आखिर ये फतवा क्यों कर दिया फतवे के आखिर में इमाम ए अहले सुन्नत फरमाते हैं:

अल हासिल हिन्दुस्तान के दारुल इस्लाम होने में शक नहीं,अजब उनसे जो तहलील ए रबु(सूद) के लिए जिसकी हुरमत नुसूस ए क़ातेआ क़ुरआन से साबित है केसी केसी वईदे इस पर वारिद इस मुल्क को दारुल हरब ठहराए और बावजूद ए क़ुदरत व इस्तितात हिजरत का

Scanned by CamScanner

ख़याल भी दिल में न लाएं।
(आअलमूल आलाम, बान हिन्दुस्तान दारुल इस्लाम)

सरकार अला हज़रत इसी तरफ इशारा करते हुवे आगे फरमाते हैं:
गोया ये बलाद इसी दिन के लिए दारुल हरब हुवे थे के मज़े से सूद के लुत्फ़ उड़ाए और बआराम तमाम वतन मालूफ में बसर फरमाए।
अस्तग फिरुल्लाह तो क्या बाज़ किताब पर ईमान लाते हो और बाज़ का इनकार करते हो।
(आअलमुल आलाम, बान हिन्दुस्तान दारुल इस्लाम)
इसी फतवे में आखिर में सरकार आला हज़रत ने सूद की हुरमत वाली अहदीस मुबारका नक़्ल की है, जिससे ज़ाहिर होता हे ये फतवा सूद और झूठे फतवो के जवाब में था नकी अंग्रेजों के लिए।

दारुल हरब व दारुल इस्लाम

किसी मुल्क के वहां इक़्तेदार और नाफ़िज़ कानून के लिहाज़ से दारुल हरब व दारुल

Scanned by CamScanner

इस्लाम होने की 4 सूरतें हैं:-
1) वह मुल्क जहाँ गैर मुस्लिम हुक्मरान है और उसी के वाज़ेह करदा कवानीन के मुताबिक फैसले होते हैं और शाइर ए इस्लाम पर पाबंदी है।
2) वह मुल्क जहाँ मुस्लिम हुक्मरान है और क़वानीन शरई नाफ़िज़ है।
3) वो मुल्क जहाँ मुसलमान फर्माँ रवा हैं, और वहाँ शरीयत के मुताबिक़ भी फैसले होते हैं और मक़ामी क़ानून के मुताबिक भी फैसले होते हैं।
4) वो मुल्क जहाँ गैर मुस्लिमम साहब इकतिदार हैं लेकिन फैसले हर तराह से होते हैं। शरीयत के मुताबिक़ भी और मुक़ामी क़ानून के मुताबिक भी, और शाइर ए इस्लाम पर पाबन्दी भी नहीं।

पहली सूरत में तो यक़ीनन दारुल हरब है बाकि तीनो किस्मे दारुल इस्लाम की है।

अब हिंदुस्तान को दारुल हरब बताने पर अंग्रेजों को खुश करने का इलज़ाम सरकार आला हज़रत पर लग सकता हे तो इमाम ए अबु हनीफा, साहिबे फतावा हिन्दीया, मोलाना

Scanned by CamScanner

अबुल हई लाखनवी पर क्या हुकम होगा क्या ये सब भी माज़ अल्लाह सुम्मा माज़ अल्लाह अंग्रेज़ो के मददगार थे। और वहाबियों को पहले अपने घर की खबर लेनी चाहिय्ये।

मोलवि अशरफ अली थानवी ने इस पर एक मुस्तकिल रिसाला"तेहज़ीरुल अख्वान अन अल राबुव् फिल हिंदुस्तान" तहरीर किया जिस्में बड़े शरह व बस्त के साथ हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम साबित किया

सवानेह मिर्ज़ा नज़ीर हुसैन में है:

हिन्दुस्तान को मिया साहब हमेशा दारूल अमान फरमाते थे,दारुल हरब कभी नहीं कहा (अल हयात बादल ममात, सवानेह उम्री, श्म्स उल ओलमा शेखुल कलम, हज़रत मोलाना मिर्ज़ा नज़ीर हुसैन देहलवी अल मारूफ मियां साहब पेज नं 134)

इल्म से खली जाहिल साहिबान को ये बताना चाहिय्ये की हिंदुस्तान को दारुल इस्लाम फिक़्ह की रौशनी में फरमाने पर अगर अंग्रेजों की हिमायत का इलज़ाम लग सकता है

Scanned by CamScanner

तो अपने इन ओलमा ओ पर क्या हुक्म लागाओगे। दर असल मसला साफ़ है की जिसने भी हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम कहा शरीयत के दायरे में कहा। नाकि किसी को खुश कारने के लिए।

और अगर तुम्हारे नज़दीक हिन्दुस्तान दारुल हरब है तो बताओ तुम लोग यहाँ से हिजरत कब कर रहे हो और चुकी यहाँ हुक्म ए शराह नाफ़िज़ नहीं बकौल तुम्हारे तो सूद भी कल से खाना शुरू कर देना। और ये भी ज़रूरर बताना की तुम्हारे किस मोलवी ने हिन्दूसतान को दारुल हरब कहा और फिर यहाँ से हिजरत की, फिक्ह हनफ़ी की रोशनी में। जवाब का मुंतजिर।

अंग्रेज़ो का एजेंट कौन

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर अंग्रजों का एजेंट होने की बात कही गयी और देवबंदियों को मुसलमानों का खेर खुवा बताया गया आईय्ये इस पर देवबंदियों की ही किताबों

Scanned by CamScanner

के हवाले पेश करता चलूं।
हवाला नं 1
तजदीद व अहयाए दीन इशाअत तेहरवीं सफा128 मुसन्निफ़ अबुल आला मौदूदी बानी ए जमात ए इस्लामी
"जिस वक़्त ये हज़रात(सैय्यद अहमद बरेलवी,और स्माइल दहलवी) जिहाद के लिए उठे हैं, उस वक़्त ये बात किसी से छुपी हुयी न थी, की हिन्दुस्तान में असल ताक़त सिखों की नहीं, अंग्रेजों की है और इस्लामी इंक़लाब में सबसे बड़ी रुकावट अगर कोई हो सकती है, तो अंग्रेजी हो सकती है, फिर समझ नहीं आता की किस तराह इन बुज़ुर्गों की निगाह से ये बात ओझल रह गई"

अबू आला मौदूदी खुद इस बात का इक़रार कर रहा है की अंग्रेजों से जिहाद छोड़ कर सिक्खों से लड़ना समझ के परे हैं।

हवाला नं 2
अंग्रेज़ो से जिहाद दुरुस्त नहीं इस्माइल देहलवी
"ये भी सही रिवायत है असनए क़याम कलकत्ता में जब एक रोज़ मौलाना मुहम्मद

Scanned by CamScanner

इस्माईल शहीद वाज़ फार्मा रहे थे के एक शख्स ने मौलाना साहब से फतवा पुछा के सरकार अंग्रेज़ से जिहाद करना दुरुस्त है या नहीं? आप ने फ़रमाया ऐसी बेरुरिया और बे मुतास्सिब सरकार पर किसी तराह भी जिहाद दुरुस्त नहीं। (मोलवी जाफर थानेसरि सवानेह अहमदीसफा 171, मिर्ज़ा हैरत देहलवी हयात ए तैय्यब सफा 423)

हवाला नं 3

मोलवी रशीद अहमद गंगोही और बनिए दारुल उलूम देवबंद क़ासिम नानोतवि का अपनी मेहर बान सरकार (अंग्रेज़ों) का खेर खुवाह होना "ये हज़रात हकीकतन बे गुनाह थे, लेकिन दुश्मन की याद गोही ने इन्हें बागी और सरकारी खता कार ठैरा रखा था, इसी लिए गिरफ़्तारी की तलाश थी, मगर हक़ ताला की हिफाज़त बर सर थी इसलिए कोई आंच न आई और जैसा के आप हज़रात (रशीद अहमद गंगोही और क़ासिम नानोतवि) अपनी मेहरबान सरकार के खेर खुवाह थे, ताज़ीस्त खेर खुवाह ही साबित रहे। (ताज़्कीरतु र्रशीद जिल्द 2 सफा

Scanned by CamScanner

77 मुसन्निफ़ मोलवी आशिक़ इलाही मेरठी)

हवाला नं 4

आपको इस्तक्लाल बने हुवे खुदा के हुक्म पर राज़ी थे, और समझे हुवे थे के जब में हक़ीक़त में सरकार का फार्मा बरदार हूं तो झूठे इलज़ाम से मेरा बाल भी बाका न होगा, और अगर मारा भी गया तो सरकार मालिक है उसे इख़्तियार है जो चाहे करे। (ताज़्कीरतु रशीद जिल्द 2 सफा 80)

जब ओलमा इक़रामो को सूली चढ़ाया जा रहा था उस वक़्त देवबंद नाशोनुमा पा रहा था, अब समझ आया क्यों अंग्रेजी हुकूमत में जब चारों तरफ मुसलमानो का क़त्ले आम हो रहा था देवबंद फल फूल रहा था।

हवाला नं 5

एक शख्स ने मुझसे (अशरफ अली थानवी से) दरयाफ़्त किया था के अगर तुम्हारी हुकूमत हो जाए, तो अंग्रेज़ो से क्या बर्ताओ करोगे? मेने कहा(अशरफ अली थानवी ने) महकूम बना कर रखेंगे, क्योंकी जब खुदा ने हुकूमत दी है, तो मेहकूम बना कर ही रखेंगे, लेकिन साथ ही उन्हें

Scanned by CamScanner

बड़े आराम व राहत से रखा जाएगा, क्योंकि उन्होंने हमें बहुत आराम पाहूचाया है। (अल ईफाज़तुल योमिया हिस्सा चहरुम सफा 697)

वफादारी का सवाल है वफ़ा तो निभायी जायेगी।

ये तो थे अंग्रेज़ो से दोस्ती के सबूत खुद ओलमए देवबंद की क़ुतुब से, अब फतवा हरमैन शरीफेन की वह इबारतें जिनके सबब हरमैंन के ओलमां ने इन पर कुफ़्र का फतवा दिया।

अशरफ अली थानवी हिफज़ुल ईमान

"दरयाफ़्त तलब ये अम्र है की इस गै़ब से मुराद कुल गै़ब हे या बाज़ उलूम ए गैबिया मुराद है, अगर बाज़ उलूम ए गैबिया मुराद है तो इसमें हुज़ूर (सलल्लाहो अलैही व सल्लम) ही की क्या तख्सीस (खुसूसियत) ऐसा इल्म ए गै़ब तो (जैसा रसूलुल्लाह को है) ज़ैद, अमर, बकर(ऐरे गेरे), हर सबिह मजनू (पागल दीवाने),बल्कि जमी हैवनात (हर चोपायो),व बहीम के लिए भी हासिल है।

Scanned by CamScanner

क़ासिम नानोतवि तेहज़ूरिन्नस
आप का खातम होना अंबिया ए गुज़िश्ता की निस्बत ख़ास न होगा, बल्कि अगर बिल फ़र्ज़ आपके ज़माने के कहीं और कोई नबी हो तो जब भी आपका खातम होना बदस्तूर बाकी रहेगा

इसे ही दिखा कर क़ादियानी ने नबुव्वत का दावा किया था। आरज़ि नबी ऐसी और भी इबारत हैं जिन्हें ओलमाए हरमैन शरीफेन ने देखा और इन पर कुफ्र का फतवा दिया। क्या ओलमाए हरमैन दूध पीते बच्चे थे जो उन्होंने तहक़ीक़ न की होगी इनके कुफ्र पर, अरे यहाँ जब तलाक के मुआमले में गवाह और शहादत लगती हे तो उन जलील ओ क़द्र ओलमा ने इन इबारतों की तहक़ीक़ न की होगी बिलकुल की और इसी किताब हुस्सामुल हरमैन की मार ये देओबंदी आज भी झेल रहे हैं।

इससे हक़ीक़त वाज़ेह हो गयी की कौन अंग्रेजो का एजेंट है किसने क़ादियानी को नबुव्वत का रास्ता दिखाया। और हस्सामुल हरमैन में इनके कुफ्र को ज़ाहिर किया न की

Scanned by CamScanner

किसी को काफिर बनाया। ये तो बहुत मुख़्तसर इबारतें हैं हवालेजात का एक बड़ा जखीरा हमारे पास है लेकिन इतने ही पर बस है की मानने वाले के लिए एक हवाला काफी और में न मनु के लिए पहाड़ भी लगा दिया जाए कम है।

अल्लाह इनके मकर व फरेब से हमारी हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत पर इल्ज़ामात के जवाब

मलफुज़ात में शैतान के नमाज़ पढ़ने वाले वाकिये पर ऐतराज़ का जवाब

सरकार आला हज़रत पर लगने वाले बोहतनो में से मुखालेफीन का एक बोहतान इस वाकिये पर भी है-

एक परी मुशर्रफ ब इस्लाम हुई अक्सर खिदमत ए अक़्दस में हाज़िर होती थी एक बार अरसे तक हाज़िर न हुई सबब दरयाफ़्त किया, तो अर्ज़ की हुज़ूर मेरे अज़ीज़ का हिंदुस्तान में इंतिक़ाल हो गया था में वहां गयी थी रास्ते में मेने देखा की एक पहाड़ी पर इब्लीस नमाज़ पढ़ रहा है, मेने उसकी ये नयी बात को देख कर पूछा तेरा काम तो नमाज़ से ग़ाफ़िल करना है तू खुद कैसे नमाज़ पढता है? उसने कहा शायद रब्बुल इज़्ज़त मेरी नमाज़ क़ुबूल फरमाए और मुझे बख्श दे

(मलफुज़ात ए आला हज़रत हिस्सा अव्वल)

Scanned by CamScanner

इस वाकिए पर मुखालेफीन के ऐतरज़ात दर्ज ज़ैल है-

1) शैतान को नमाज़ी बना दिया

2) ये मंघडन्त रिवायत है और हुज़ूर पर झूठ बाँधा गया है

अईय्ये इनके एक एक एतराज़ का जाएज़ा लें,

1) शैतान को नमाज़ी बना दिया:-

वहाबियों का ये ऐतराज़ सिर्फ मक्र पर मबनी है इस तरह का ऐतराज़ कर वह सिर्फ आवाम को धोका देते है और इससे ज़्यादा कुछ नहीं। वाकिए में कहीं ये नहीं कहा गया या इस वाकिए को इस्तदलाल बना कर ये नहीं कहा गया है की देखो शैतान नमाज़ी है। ये वाक़िया सरकार आला हज़रत ने अपनी तरफ से नहीं लिखा आपने इसे नक़ल किया। अगर ये ऐतराज़ तास्सुब की बिना पर नहीं है तो क्या जिन जिन भी बुज़ुर्गों ने इसतरह की रिवायत नक़ल की है क्या उन सब ने शैतान को नमाज़ी

Scanned by CamScanner

बता दिया है या नमाज़ी को शैतान? अगर सब के लिए ये काईदा नहीं है तो साबित होता है की ये इलज़ाम सिर्फ तअस्सुब की बिना पर है लेकिन अगर इन्साफ और ईमान की अब भी हरारत बाकि है तो उन बुज़ुर्गों पर भी ये फतवा आइद कर के दिखाए।

सरकार हुज़ूर अल्लामा इमाम जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैहि की किताब लक़तुल मरजान फी अहकामिल जान जिसका तर्जुमा देवबंदियों के मोलाना इमदाद उल्लाह नूर ने किया जिसका नाम तारीख जिन्नात व शयातीन है में ये रिवायत लिखी है हज़रत ए इब्न ए अब्बास रदियल्लाहो अन्हो फरमाते है की हमारा एक दोस्त रात में अपने घर में नवाफ़िल पढ़ा करता था, जब वह नमाज़ शुरू करता तक़बीरे तहरीमा कहता तो एक शख्स सफ़ेद लिबास पहने उसके पास आता और करीब में नमाज़ शुरू कर देता, उसका रूकू और सजदा हमारे दोस्त के रूकू और सजदे से ज़्यादा खूबसूरत होता उसने इसे हैरत में डाल दिया तो उसने किसी दोस्त से इसका

Scanned by CamScanner

ज़िक्र किया, और उसने इसके बारे में मुझसे पुछा क्या ऐसा हो सकता है? मेने कहा उस नमाज़ी से कहो की सूरा ए बक़र पढ़ कर देखे अगर वह ठहरा रहा तो वह फरिश्ता है और उसे मुबारक हो, लेकिन अगर वह भाग गया तो वह शैतान है। उसने यही किया अगले दिन जब वह नमाज़ के लिए खड़ा हुवा वह शख्स भी आ कर उसके साथ खड़ा हो गया, जैसे ही उस शख्स ने सूरह बक़र पढ़नी शुरू की तो वह शैतान पीठ दिखा कर भाग गया।
(तारीख जिन्न व शयातीन सफा 413, धोके बाज़ी की अजीब हिकायत)

इसी किताब से एक और हवाला मुलाहिज़ा हो,

हज़रत ए इब्ने उमर रादीअल्लाहो अन्हो फरमाते हैं शैतान हज़रत ए मूसा अलैहिस्सलाम से मिला था उसने कहा था ए मूसा अल्लाह ताला ने आपको अपनी रिसालत से मुन्तख़ब फ़रमाया है और आप से कलाम फरमाया है में भी खुदा की मखलूक हूँ मेने गुनाह किया है

Scanned by CamScanner

और में तौबा करना चाहता हूँ अपने परवरदिगार से मेरी सिफारिश कर दीजिए ताकि वह मेरी तौबा को क़ुबूल फर्मा ले, तो हज़रत ए मूसा अलैहिस्सला ने अल्लाह ताला से दुवा फ़रमाई, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया ए मूसा मेने तेरी हाजत पूरी करदी, चुनानचे हज़रत ए मूसा अलैहिस्सलाम इब्लीस से मिले और फरमाया मुझे ये हुक्म मिला की हज़रत ए आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र को सजदा करलो तो तुम्हारी तौबा क़ुबूल करली जायेगी। उसने तकब्बुर किया और गुस्से में कहा मेने उसे ज़िन्दगी में सजदा नहीं किया अब मर जाने के बाद क्या करूँ?
(तारीख जिन्नात व शयातीन, हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से ईबलीस की मुलाकात सफा303)

इसी तरह का एक और वाकिया हज़रत ए नूह अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ इसी किताब में दर्ज है, कहिए क्या इन वाकियात में शैतान मरदूद को नमाज़ी व तौबा का इरादि न कहा

Scanned by CamScanner

गया? अब भी फतवों का मयार वही है तो लगाओ इमाम जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह पर हुक्म। और इस किताब की तर्जुमानी व नक़ल की बुनियाद पर लगाओ अपने मोलवी पर हुक्म। तुम हरगीज़ नहीं लगा सकते साबित हुवा तुम्हारा ऐतराज़ सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहि पर सिर्फ बुग्ज़ो हसद की बुनियाद पर है।

2) ये मनघडन्त रिवायत है हुज़ूर पर झूठ बाँधा गया है:-

अगर ये बकौल आपके वाक़ई मनघडन्त रिवायत है जिसे आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी तरफ से लिख दी है तो आपके अकाबिरैन में से किसी एक का ही फतवा दिखा दीजिये जिसमे शरीयत की रूह से हुक्म दिया हो। नहीं दिखा सकते कयामत तक नहीं दिखा सकते जबकि हदीस ए मुबारका में है,
मफ़हूम जिसने मेरी (हुज़ूर अलैहिस्सलाम की) तरफ झूठ बाँधा वह अपना ठिकाना जहन्नम में समझले अब अईय्ये मलफुज़ात शरीफ की

Scanned by CamScanner

उस रिवायत की आपको हवाला देते चलें।

मिज़ानुल ऐतदाल में ये वाकिया दर्ज है सफा नंबर 525

इसके अलावा यही वाकिया

अल सबा फि मारेफतुल सहाबा में सफा नं 86

तारिख ए जुरजान में साफ 203 व 204 पर मौजूद है।

सरकार आला हज़रत ने इन्ही किताबों से ये वाकिया नक़ल किया और नाकिल पर नकल करने पर कोई हुक्म आइद नहीं होता।

इब्ने जोजी ने इसे मोज़ूह कहा है लेकिन अकेले इब्न ए ज़ोजी के कहने से ये रिवायत मोज़ू नहीं हो जाती उन्होंने एक रावी को गैर मारूफ़ बताया किसी रावी के गैर मारूफ होने से रिवायत ज़ईफ़ होती है न के मोज़ू। इब्न ए ज़ोजी जिरह में मुतशद्दिद है।

अल साबा फि मारैफतुल सहाबा में हाफ़िज़ इब्ने हजर असकलानि ने इस रिवायत पर एतमाद करते हुवे फारेअत अलजुनिया का शुमार सहाबा में किया है, इस तराह आला हज़रत ने ये रिवायत हिकायत के रंग में

Scanned by CamScanner

मलफ़ुज़ात में ब्यान की है तो इस पर ऐतराज़ करने से पहले हाफ़िज़ इब्ने हजर असकलानि रहमतुल्लह अलैहि पर ऐतराज़ उठाये।

इस पूरी जिरह से ये साबित हुवा की सरकार आला हज़रत पर सिर्फ हसद व बुग्ज़ कि बुनियाद पर ऐतराज़ उठाया जाता है अगर ये वाक़ई हक़ गो हैं तो पहले घर की खबर लें, वहाबियों के मुल्ला इसमाईल देहलवी तकवियतुल ईमान में लिखता है,

हुज़ूर ने फ़रमाया में भी एक दिन मर कर मिटटी में मिल जाऊंगा।

बताओ वहाबियों ये हदीस कहाँ मौजूद है? और अगर नहीं बता सकते तो लगाओ अपने मुल्ला पर हुक्म और नहीं लगाते तो साबीत हुवा तुम फरेबी हो और हासिद भी।

दुवा है मोल ऐसे हासिदों से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

आला हज़रत पर इलज़ाम के जवाबात

शुमाली हवा वाले वाकिए पर ऐतराज़ का जवाब

सरकार आला हज़रत पर लगाये जाने वाले ऐतराजात मे से एक ऐतराज़ अलमलफूज़ के एक वाकिए पर उठाते है अईय्ये इसका जाइज़ा लिया जाए-

ऐतराज़:-

जब मजमुआ हुवा कुफ्फार का मदीना तैय्यबा पर के इस्लाम का किला कमा करदें, गज़वाये अहज़ाब का वाकिया है, रब अज़॰जल ने मदद फरमान चाही, अपने हबीब की शुमाली हवा को हुक्म हुवा जा काफिरों को नीस्त व नाबूत करदे, उसने कहा बिब्यान रात को बहार नहीं निकलती। अल्लाह ताला ने उसे बाँझ कर दिया इसी लिए शुमाली हवा से कभी पानी नहीं बरसता।

(मलफुज़ात ए आला हज़रत)

Scanned by CamScanner

देखो अहमद रज़ा ने अल्लाह को बे इख़्तियार कर दिया, इस रिवायत का क़ुतुब ए हदीस में कोई तज़किरा नहीं, हिन्द व पाक में शुमाली हवा से खूब बारिश होती है शुमाली हवा को बाँझ कहना और उससे बारिश न होना भी बोहतान है।

इस तरह के एतराज़ अक्सर वहाबी देवबंदी सरकार आला हज़रत पर करते रहते हैं और जो थोड़े कम इल्म और जिनका मुताल्ला कम होता है के सामने ऐसे ऐतराज़ उठा कर अक्सर लोगों को धोका देते रहते हैं, और अपने जाल में फांस्ते रहते हैं अईय्ये इनके ऐतराज़ात का जाइज़ा लिया जाए।

क्या क़ुतुब ए हदीस व तफसीरात में ये वाकिया दर्ज नहीं है? क्या ये वाकिया बनाया हुवा है?

जवाब:-

ये वाकिया सरकार आला हज़रत ने खुद से बयान नहीं किया बल्कि इसे कई साहिब ए

Scanned by CamScanner

तफ़सीर और मुहद्देसीन ने बयान किया सरकार आला हज़रत इस वाकिए के नाकिल हैं। अईय्ये आपको बताए ये वाकिया कहाँ कहाँ दर्ज है और किस किस ने इसे नक़ल किया है-

1) मज़कूरा वाकिया को मशहूर मुहद्दिस शैख़ अबु बकर अहमद बिन उमर बिन अब्दुल ख़ालिक़ (मुतवफ्फि 292 हिजरी) ने अपनी मुस्नद में नक़ल फ़रमाया। जैसा की अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़ुर्क़ानी मालकि रहमतुल्लाह अलैहि ने "शराह मवाहिब लादुनिया में फरमाया"
इमाम अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई रहमतुल्लाह ताला अलैहि ने अपनी मशहूर किताब "अस्सानुल हैवान अला सीरतुल अमीनुल मामून" अल मारूफ़ सीरतुल हलबिया में नक़ल फरमाया।
शैख़ मुहक़्क़ीक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी मशहूर किताब "मदारिजुन नबुव्वत" जिल्द दौम में इस वाकिए का ज़िक्र फरमाया।

Scanned by CamScanner

यही वाकिया मुख़्तलिफ़ अल्फाज़ात के साथ दर्ज ज़ैल क़ुतुब ए तफ़सीर में भी मौजूद है- तफ़सीर इब्न ए कसीर, तफ़सीर इब्न ए जरीर, तफ़सीर इब्न ए अबी हातिम, तफ़सीर दुर्रे मन्सूर।

वाहबियो का ये झूठ हवा हो गया की ये वाकिया कही दर्ज नहीं मन घडन्त है वगैरह, इससे इनकी ला इल्मी और जहालत का साफ़ पता चलता है और अगर जान बूझ कर झूठ बोला तो इनके बातिल होने की इससे बड़ी दलील क्या है की ये झुटे मक्कार फरेबी है।

अगर महज़ वाकिया नक़ल करने की बिना पर बक़ोल वहाबी इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल ए बरेलवी रहमतुल्लाह ताला अलैहि गुमराह बदमज़हब बद्दीन हो गए तो ज़रा इन मुहद्देसीन व मुफ़स्सिरीन के मुताल्लिक़ भी अपनी राय बता दीजिये जिन्होंने इस वाकिए को नक़ल किया है-

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हो (मुतवफ्फि 68 हिजरी)

हज़रत ए अबु अक्रमा रहमतुल्लाह

Scanned by CamScanner

अलैहि(मुतवफ्फि 106 हिजरी)
हज़रत ए अबु बकर बिन मुआविया बिन मर्विया रहमतुल्लाह अलैहि (मुतवफ्फि 416 हिजरी)
हज़रत ए अबु बकर अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल खालिक रहमतुल्लाह अलैहि (मुतवफ्फि 293हिजरी)
हज़रत ए अली बिन बुरहान उद्दीन साहिब ए सीरत ए हलबिया रहमतुल्लाह अलैहि (मुतवफ्फि 1044 हिजरी)
हज़रत ए मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़ुर्क़ानी मालकी रहमतुल्लाह अलैहि (मुतवफ्फि 1052 हिजरी)
शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह (मुतवफ्फि 1122 हिजरी)
और भी काई ओलमा इकराम ने इस वाकिए को नकल किया है जिनकी एक तवील फेहरिस्त है इतने सालो से ये वाकिया नक़ल होता आ रहा है किसी ने इस पर कोई तान नहीं कसा लेकिन अंग्रेज़ों के ज़माने में पैदा हुवे वहाबी देवबंदियों को इसमें बद दयानति नज़र

Scanned by CamScanner

आ गयी।

क्या माज़ अल्लाह, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इख़्तियार न चला?

क़ुरआन ए मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है-
हमने उन पर आंधीयां और लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए (सुरा: ए अहज़ाब आयत 9)
अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फरमाता है की हमने हवा के ज़रिये तुम्हारी मदद फ़रमाई,
हज़रत ए इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है की,
अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बाद ए शुमाली को बाँझ कर दिया, बाँझ करने का मतलब यही है की इससे पानी नहीं बरसता
अल्लामा मुहम्मद अहमद अल अंसारी क़ुरतबी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं,
हज़रत ए अक्रमा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया (जंग) अहज़ाब की रात बाद ए जुनुब ने बाद ए शुमाल से कहा के हुज़ूर

Scanned by CamScanner

अलैहिस्सलाम की मदद के लिए चलो, बाद ए शुमाल ने जवाब दिया के असील औरत रात को नहीं चलती, जो हवा हुज़ूर अलैहिस्सलाम के लिए मदद को चली वह बाद ए सबा थी। (तफ़सीर ए क़ुरतबि)

ये वाकिया मदीना मुनव्वरा (अरब) का है अरब पर हिन्द व पाक को कयास करना जहालत है।

दर्ज ए बाला वाकियात से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बे इख़्तयारी साबित करना अक़्ल व फ़हम, का कुसूर और जहालत व हिमाकत के सिवा कुछ नहीं। तामील ए हुक्म न करना और हुक्म न चलने में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। हुक्म न चलना हाकिम की आजिज़ की दलील है, और किसी सरकश का हुक्म न मानना और सज़ा पाना हकीम के आजिज़ होने की दलील नहीं, बल्कि हाकिम के क़ादिर होने की दलील है, वहाबियों ने क़ादिर होने की दलील को धोका देकर आजिज़ की दलील बनाने की कोशिश की जो परले दर्जे की जहालत और बे ग़ैरती है, ज़रा वहाबी देवबंदी जवाब दे-

Scanned by CamScanner

"अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने शैतान मलऊन को हुक्म ए सजदए आदम दिया उसने इनकार किया और सज़ा पायी, कहो यहाँ बे इख़्तीयारी है या न फ़रमानी"?

"अल्लाह ताला ने क़ुरआन ए मजीद में इंसान व जिन्न को ईमान लाने का हुक्म दिया, अक्सर ईमान नहीं लाते कहिये ये क्या है?"

"अल्लाह ताला ने मुसलमानो को हुक्म दिया की शरीयत की पाबन्दी करो अक्सर ने ना फ़रमानी की कहिये ये भी बे इख्तियारी है माज़ अल्लाह, या बन्दे की न फ़रमानी?"

इन तमाम मिसालो में न फ़रमानी है न की बे इख़्तयारी। ठीक उसी तरह बाद ए शुमाली की न फरमानी थी जिस पर क़ादिर की गिरफ्त हुई।

अब अईय्ये ज़रा इनके यहाँ अल्लाह ताला को कितना इख़्तयार दिया है नज़र डालें

Scanned by CamScanner

"अल्लाह झूठ पर कादिर है"
(यक रोज़ा, इस्माइल देहलवी, बराहिन ए क़ातिया)

"खुदा चाहे तो न इंसाफी कर सकता है"
(मज़ाहिब ए आलम में खुदा का तसव्वुर, ज़ाकिर नाईक)

"अल्लाह चाहे तो फिरौन, हमान, अबु लहब को जन्नत में डाल दे, मगर वोह ऐसा करेगा नहीं"
"इमकान ए किज़्ब(झूठ)तहत ए क़ुदरत बारी ताला हैअल्लाह ताला ने जो वादा वईद फ़रमाया है, खिलाफ पर कादिर है"
(फतावा रशिदिया, रशीद अहमद गंगोही)

कहिय्ये माज़ अल्लाह सुम्मा माज़ अल्लाह, क्या अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त न इंसाफ हो सकता है? खुदा को झुटा साबित कर निज़ाम ए ख़ुदा वन्दी दिहर्मि बीरहम करने की साजिश नहीं तो और क्या है? लोगों का क़ुरआन और हदीस से भरोसा खत्म करने की साजिश नही

Scanned by CamScanner

तो और क्या है?

अल्लाह ताला ऐसे झूटो मक्कारो से हमारी हिफाज़त फ़रमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत पर ऐतराज़ के जवाबात

मलफूज़ शरीफ में जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि के वाकिए पर इलज़ाम का जवाब

सरकार आला हज़रत पर लगने वाले इल्ज़ामात में एक इलज़ाम मलफुज़ात ए आला हज़रत के एक वाकिए पर ऐतराज़ उठा कर बद मज़हब अहले सुन्नत के सीधे साधे लोगों को गुमराह करते हैं, दर असल सरकार आला हज़रत से एक वाकिए के मुताल्लिक़ सवाल हुवा की-

हुज़ूर ये वाकिया किस किताब का है की हज़रत ए सैयेदि ताइफ़ जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि ने या अल्लाह फरमाया और दरया से उतर गए, पूरा वाकिया याद नहीं

सवाल करने वाले ने एक किताब का हवाला माँगा और पूरे वाकिए से अपनी ला ज़हनी

Scanned by CamScanner

ज़ाहिर की इस पर सरकार आला हज़रत ने जवाब दिया-

गालिबन हदिकाये नदिया में है की एक मर्तबा हज़रत सैय्यिदि जुनैद बगदादी रहमतुल्लाहि ताला अलैहि दजला पर तशरीफ़ लाए और या अल्लाह कहते हुवे इस पर ज़मीन के मिस्ल चलने लगे, बाद को एक शख्स आया उसे भी पार जाने की ज़रूरत थी, कोई कश्ती उस वक़्त मौजूद नहीं थी, जब उसने हज़रत को जाते देखा, अर्ज़ की में किस तराह आऊ फरमाया या जुनैद या जुनैद कहता चल, उसने यही कहा और दरया पर ज़मीन की मिस्ल चलने लगा। जब बीच दरया में पहुँचा, शैतान लईन ने वस वसा डाला की हज़रत खुद तो या अल्लाह कहें और मुझसे या जुनैद कहल वाते हैं, में भी या अल्लाह क्यों न कहूँ? उसने या अल्लाह कहा और साथ में गोता खाया। पुकारा हज़रत में चला, फ़रमाया वही कह या जुनैद या जुनैद,जब कहा दरया से पार हुआ। अर्ज़ की हज़रत ये क्या बात थी आप या अल्लाह कहें तो

Scanned by CamScanner

पार हों, और में कहूँ तो गोता खाऊँ? फरमाया अरे ना दान अभी तू जुनैद तक तो पहुंचा नहीं, और अल्लाह तक रासाई की हवस है। अल्लाह हुअक़्बर।

मुखलफीन इस वाकिये को पेश कर अवाम को गुमराह करने के लिए कुछ झुठे ऐतराज़ात उठाते हैं, अईय्ये इसका जायज़ा लिया जाए:

ऐतराज़:-

बरैलवियो का अक़ीदह है की अल्लाह का नाम लेने से इंसान डूब जाता है, और पीर का नाम लेने से इंसान नहीं डूबता

जवाब:-

ये सिर्फ एक झूठी तोहमत से ज़्यादा कुछ नहीं इसी वाकिए में पहले यही बयान किया गया की हुज़ूर जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि या अल्लाह कहते हुवे दरिया में मिस्ल ए ज़मीन के चलने लगे, क्या यहां ये बयान किया की या अल्लाह कहने से डूब गए नहीं बल्कि बताना मक़सूद ये है की जब बँदा क़ुर्ब ए इलाही की

Scanned by CamScanner

ग़रज़ से अल्लाह को पुकारे उसकी इबादत करे तो अल्लाह तबारक व ताला ऐसे कमालात उस बन्दे में पैदा फरमाता है की उससे खिलाफ ए अक़ल काम पेश आने लगते है और जब बन्दा हसद की बुनियाद रख कर अल्लाह को पुकारे तो अल्लाह भी उससे नाराज़ हो जाता है और उसे अपने क़ुर्ब से महरूम कर छोड़ देता है फिर शैतान उसे अपनी गिरफ्त में ले कर दुनिया की रंगत में डुबो देता है अब अगर इस दुनियावी खराबियों से बाहर आना है तो पहले उसके मेहबूब बन्दों का दामन थामना होगा जब अल्लाह अपने मेहबूबीन के तुफैल उसे क़ुबूल फ़र्मालि फिर जैसे चाहे अपने रब को पुकारे वह उसे हमेशा अपने करीब पायेगा।

अगर बिल फ़र्ज़ आपके ऐतराज़ को हक़ मान लिया जाये तो ज़रा बताए इस हदीस ए मुबारका के मुताल्लिक आपका क्या ख्याल है:-

हज़रत ए अबु मसऊद रदियल्लाहो अन्ह से रिवायत है, वह अपने गुलाम को मार रहे थे,

Scanned by CamScanner

गुलाम ने कहना शुरू किया अल्लाह की पनाह, अल्लाह की पनाह,उन्होंने हाथ न रोका, गुलाम ने कहा रसूलुल्लाह की पनाह, उन्होंने फ़ौरन छोड़ दिया। हुज़ूर सरवर ए आलम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह तुझ पर इससे ज़्यादा क़ादिर है जितना तू इस गुलाम पर। आपने उस गुलाम को आज़ाद कर दिया। (मुस्लिम शरीफ बाबा सहाबतुल ममालिक)

क्या यहाँ भी यही कहोगे की या अल्लाह कहने पर मार पढ़ती रही और जब रसूलुल्लाह की पनाह मांगी तो न सिर्फ बच गया बल्कि आज़ाद हो गया। अब हदीस ए मुबारका पर भी माज़ अल्लाह लान तान करोगे? क्या अब भी आपका इन्साफ का वही पैमाना रहेगा। क्या अब भी लान तान करोगे तो ज़रा शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहलवी रहमतुल्लाह अलैहि का "इय्याका नाबोदू" की तफ़सील में फरमान भी सुन लीजिये:-

और अगर तवज्जो महज़ अल्लाह ताला की तरफ हो और उसे अल्लाह ताला की इमदाद का मज़हर जाने, और अल्लाह ताला की

Scanned by CamScanner

हिकमत और कारखान ए असबाब पर नज़र करते हुवे उस गैर से ज़ाहिरी इस्तिआनत करे, तो ये राह मारेफ़त से दूर न होगी और शरीयत में जाइज़ और रावा है, इस तराह की ये इस्तिआनत अंबिया व औलिया ने गैर से की है, दर हक़ीक़त ये इस्तीआनत की ये किस्म गैर की नही बल्कि अल्लाह ताला ही से है।

शाह साहब के इस क़ोल से ये बात साफ़ हो गयी की अल्लाह के रसूल सलल्लाहो अलैहि व सल्लम व औलिया इकराम से मदद मांगन अल्लाह ही से मदद मांगना है। लगाओ अपना फतवा शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि पर। लगाओ सही मुस्लिम शरीफ पर फतवा। क्या अब भी अपनी लानातों और मलमतों का निशाना वेसे ही रखोगे जैसा सरकार आला हज़रत पर रखा? अगर नहीं तो साबित हुवा की तुम इन्साफ से और बुज़ुर्गों के रास्ते से कितने दूर हो।

ऐतराज़:-

या अल्लाह कहना शैतानी वस्वसा बता दिया

Scanned by CamScanner

जवाब:-

अगर बकौल आपके या अल्लाह कहना शैतानी वस्वसा बताया है तो जब जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि ने या अल्लाह कहा तो उसे शैतानी वस वसा क्यों नहीं बताया है? दर असल इस इबारत में मुर्शिद की न फ़रमानी करने को वस वसा बताया नाकि या अल्लाह कहने को और रही बात शैतानी वस वासे की तो जो हदीस ए मुबारका है जिसमे सफों को पुर करने और कन्धों को कन्धों को अच्छी तराह मिलाने का हुक्म है क्योंकि खाली जगह में शैतान घुस कर खड़ा हो जाता है तो क्या मस्जिद में जाना और सफों में खड़ा होना शैतानी अमल बता दिया गया। अल्लाह की पनाह ऐसे जाहिलो से।

ऐतराज़:-

बरैलवियों का ये अक़ीदह है

जवाब:-

सबसे पहले किसी किताब का हवाला देना या

Scanned by CamScanner

किसी किताब का कोई वाकिया हिकायत की बिना पर बताना अक़ीदा नहीं। और जब सवाल ही में ज़ाहिर हो रहा है की साइल ने किताब का हवाला माँगा और पूरे वाकिए से अपनी ल ज़ेहनी ज़ाहिर की तो हवाला दे कर और वाक़िया बयान करना ये नहीं बाताता की ये अक़ीदा है वरना असल वाकिया जिस किताब से है ज़रा उन पर भी कोई हुक्म आइद करदो फिर देखें आपमें कितनी दयानत दारी है और अगर नहीं कर सकते तो साबित हुवा की बुग्ज़ ओ हसद से ज़्यादा आपके ऐतराज़ में कुछ नहीं। और अगर वाक़ई हक़ परास्त हो तो ज़रा देवबन्दी हज़रात अपने घर की भी खबर रख लेते,

एक मर्तबा हज़रत शाह हाजी इमाम उद्दीन रहमतुल्लाह अलैही अलील हुवे और आह आह करने लगे,हज़रत मुफ़्ती इलाही बख्श साहब बिरादर ए हाजी साहब इयादत को आये और कहा अह अह क्यों करते हो अल्लाह अल्लाह करो, उन्होंने कुछ खयाल न किया, और आह में मशगूल रहे, एक दिन इत्तीफाकन मुफ़्ती

Scanned by CamScanner

साहब भी इसी मर्ज़ में मुब्तिला हुवे और अल्लाह अल्लाह करने लगे आह मुह से न निकाला हज़रत शाह साहब ने आकर फ़रमाया जब तक आह न कहोगे सेहत न मिलेगी।

चुनाचे यही हुवा मर्ज़ तरक्की करता गया किसी तरह तख़फ़ीफ़ न हुवी, बिल आखिर मुफ़्ती साहब ने आह करना शुरू किया और सेहत हासिल हो गयी। ये मुकाम ए अब्दीयत था और तज़ल्लील व अब्दीयत मेहबूब को मेहबूब है। और इसी में रज़ा तक़सीम भी मक़्सूद रहे और अल्लाह अल्लाह मक़ाम ए अब्दीयत है।
(इमदादुल मुश्ताक़,वाक़या नं 43)
कहिये आपके घर में आह आह को अल्लाह अल्लाह पर बढ़ाई दी या नहीं? अगर दी तो यहाँ वह ऐतराज़ क्यों नहीं? और जो तावील मक़ाम ए अब्दीयत व मक़ाम ए महबूबियत की यहाँ मौजूद है वहां क्यों नहीं?

मालूम हुवा तुम्हारे ऐतराज़ सिर्फ बुग्ज़ व हसद की बुनियाद पर है। वरना किसी किताब का हवाला बताना व किसी किताब का वाकिया बताने पर कोई हुक्म सादिर नहीं

Scanned by CamScanner

होता।

अल्लाह ताला ऐसे हसीदीनो से हमारी हीफ़ाज़त फरमाए और ओलमा इकराम से दीन समझने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

नोट:-

याद रहे ये वाकिया हज़रत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहि का नहीं बल्कि सैय्यदि शम्स उद्दीन मुहम्मद हनफ़ी शाज़ली मिस्री (मुतवफ्फि 847 हिजरी) रहमतुल्लाह अलैहि का है इसलिए फ़ाज़िल ए बरेलवी ने बतौर ए अहतीयात अपने जवाब से पहले लफ्ज़ ग़ालिबन इस्तिमाल किया है। आला हज़रत ने ये वाकिया अपने लफ़्ज़ों में बयान किया है यही वाकिया अल्लामा ना बिल्सी अलैहिर्रहमा ने अपनी दूसरी किताब क़शफुल नूर व असहाबुल क़ुबूर में भी दर्ज है।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर इलज़ाम के जवाबात

हज़रत ए सय्यदि अब्दुल वहाब वाले वाकिए पर ऐतराज़ का जवाब

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर लगने वाले ऐतराजात में से एक ऐतराज़ मलफूज़ शरीफ के सय्यदि अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैहि के इस वाकिए पर भी उठता है अईय्ये ज़रा इसकी हक़ीक़त का जायज़ा लें।

हज़रत सय्यदि अब्दुल वहाब अकाबिर ए औलिया में से हैं हज़रत सय्यदि अहमद बद्वि कबीर के मज़ार पर बहुत बड़ा मैला और हुजूम होता था, इस मजमे में चले आते थे, एक ताजिर की कनीज़ पर निगाह पढ़ी, निगाह फौरन फेर ली के हदीस में इरशाद हुवा पहली नज़र तेरे लिए और दूसरी नज़र तुझ पर, यानि पहली नज़र का कुछ गुनाह नहीं दूसरी नज़र का

Scanned by CamScanner

मुआखज़ा होगा, खैर निगाह तो आप ने फेर ली मगर वो आपको पसन्द आई, जब मज़ार शरीफ पर हाज़िर हुवे , इरशाद फ़रमाया अब्दुल क़ादिर वह कनीज़ पसन्द है, अर्ज़ की हाँ अपने शेख से कोई बात नहीं छुपाना चाहिय्ये इरशाद फरमाया अच्छा हमने वह कनीज़ तुमको हिबा की, अब आप सकूत मैं हैं के कनीज़ तो इस ताजिर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं, वह ताजीर वहां हाज़िर हुवा, और इस ने कनीज़ मज़ार ए अक़दस की नज़र की, खादिम को इशारा हुवा उन्होंने आपकी नज़र करदी, इरशाद फरमाया अब्दुल वहाब अब देर काहे की, फलां हुजरे में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

(मलफुज़ात आला हज़रत हिस्सा 3)

मलफूज़ शरीफ के इस वाकिए पर बहुत गलत ज़हन देकर लोगों को गुमराह किया जाता है जिन में से कुछ ऐतराजात उनके जवाबात के साथ दर्ज हैं:-

Scanned by CamScanner

ऐतराज़:-
बरैलवियों के यहाँ बुज़ुर्गों के मज़ार पर लड़कियों का चढ़ावा चढ़ता है।

जवाब:-
सबसे पहले सय्यद अब्दुल वहाब और सय्यदि अहमद बद्वि कबीर रहमतुल्लाह अलैहि को बरेलवी बताकर आपने साबित कर दिया की अहले सुन्नत वल जमाअत सुन्नी हनफ़ी बरेलवी मसलक ही हक़ है जो पहले ही से चला आ रहा है नाकि अंग्रेज़ो के दौर में पैदा हुवे वहाबी, देवबंदी की तराह कोई नया मसलक।

रही बात मज़ारात पर लड़कियों के चढ़ावा चढाने की तो जनाब किसी एक मज़ार का नाम बताओ जहां बरैलवियों के हाथ में निज़ाम हो और लड़कियां चढ़ाई जाती हों। और अगर नहीं साबित कर सकते तो तुम झुठे साबित हुवे।

अब इस वाकिए की तरफ आए तो क्या नज़र करना वह भी अपनी कनीज़ जिसे लौन्डी या गुलाम भी कहते हैं को रखना उनसे फायदा उठाना गुनाह है? अगर आप का जवाब हाँ है तो आप क़ुरआन ए मजीद का इरशाद सुनिए:-

Scanned by CamScanner

और जो ज़कात दिया करते हैं और जो अपनी शहवत की जगह को थामते हैं, मगर अपनी औरतों पर या हाथ के माल बांदियों पर सो उन पर न कुछ इलज़ाम।
(सूरह अल मोमिनून, आयत 5, 6, मुतरजिम मुफ़्ती शफी उस्मानी)

और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं, मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से उनसे कुछ मलामत नहीं।
(सूरह अल मआरिज, आयत 29,30)

उस वाकिए में साफ़ दर्ज है की वह किसी की कनीज़ थी और उस ताजिर को पूरा हक़ है अपनी कनीज़ को जिसे चाहे नज़र करे। इस सिल सिले में बुखारी शरीफ किताबुल हिबा में हज़रते मैमूना रदियल्लाहो अन्हो से हदीस मारवी है के अगर तू अपनी लोंडी को आज़ाद करने की बजाए अपने मामू को हिबा कर देती तो इसका अज़र बहुत ही ज़्यादा होता अब जब उस कनीज़ को सय्यद अब्दुल वहाब साहब को

Scanned by CamScanner

नज़र करदी फिर वह उससे अपने हाजत पूरी करे तो क्या ये क़ुरआन ए मजीद की इन आयत कि खिलाफ अर्ज़ी है बिलकुल नहीं। तो जो इस पर ऐतराज़ उठाये क्या वह क़ुरआन ए मजीद की इन आयात के खिलाफ बोला या नहीं। फैसला आप खुद करलें।

ऐतराज़:-

आज भी बरेलवी अपनी लड़कियों को मज़ारों पर छोड़ आते हैं वहां क्या होता है सब वाकिफ हैं।

जवाब:-

इसीलिए हम कहते हैं वहाबी झूठा भी होता है और अक़ल का अंधा भी। किसी एक मौतबर आलिम का हवाला दीजिये जिसने कहा हो की अपनी लड़कियों को मज़ार पर छोड़ आए। या कोई एक मज़ार जहां बरैलवियों के हाथ निज़ाम हो और वहां ये काम होता हो किसी जाहिल और झूठे लोगों की निस्बत हमारी सिम्त ना करें, सरकार आला हज़रत का रोज़ा

Scanned by CamScanner

हो, कालपी शरीफ हो, बदायूं शरीफ हो, माहरेरा शरीफ हो, किछौछा शरीफ हो कही भी चले जाएँ जहाँ निज़ाम सरकार आला हज़रत के चाहने वालों के हाथ में है वहाँ कहीं भी न सिर्फ इस तराह की बल्कि किसी भी तराह की खुराफात नहीं होती।

इससे बस आपका झूठ और मक्र ही साबित होता है और इस तराह के ऐतराज़ कर आप खुद को यहूदियों और इसाईय्यों का एजेंट ही साबित कर रहे हो क्यों की इस्लाम में क़ुरआन व हदीस व शरीयत के इस निज़ाम पर (कनीज़ रखना हिबा करना वाले) यहूदी और ईसाई ही ऐतराज़ उठाते थे आपने इसे उठा कर खुद को उनका पैरोकार साबित किया है। खेर न तो इस्लाम में कनीज़ हिबा (नज़र) करना मना है, नहीं उनसे फायदा उठाना, जिन्हें इस बात पर ऐतराज़ है उसे क़ुरआन व हदीस के इन इरशाद व शरीयत के इन क़वानीन पर भी ऐतराज़ है।

अल्लाह ताला हसद में अंधे ऐसे हसेदीन से

Scanned by CamScanner

हमारी हिफाज़त फरमाए। ऐसे झुठे, मक्कार, व फरेबियों से बचने की तौफ़ीक़ अता फरमाए, ओलमाए हक़ से बद ज़न होने से महफूज़ फरमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत पर इलज़ाम के जवाबात

हदाइक़ ए बख्शीश हिस्सा 3 पर ऐतराज़ का जवाब

सरकार आला हज़रत पर लगाये जाने वाले ऐतराज़ में से एक ऐतराज़ हदाइक़ ए बख्शीश हिस्सा 3 के एक अशआर पर भी इलज़ाम आइद करते हैं अईय्ये इसका जायज़ा लिया जाए।

ऐतराज़:-

अहमद रज़ा साहब ने हज़रत ए आईशा सिद्दीका की शान में गुस्ताखी की हदाइक़ ए बख्शीश हिस्सा 3 में ये शेर लिखे जो सख्त गुस्ताखाना हैं,

तंग व चुस्त उनका लिबास,और वो जोबन का उभार,
मस्की जाती है क़बा से कमर तक लेकिन, ये

Scanned by CamScanner

फटा पढता है जोबन मेरे दिल की सूरत,
के हुवे जाते हैं जामे से सीना व बर,

देखो ये हज़रत ए आईशा की शान में कितनी सख्त तौहीन है माज़ अल्लाह माज़ अल्लाह

जवाब:-

हदाइक़ ए बख्शिश हिस्सा 3 सरकार आला हज़रत की तस्नीफ नहीं न ही आपने इसे अपनी ज़िन्दगी में कभी तहरीर फ़रमाई न ही इसे तरतीब दी। दर असल सरकार आला हज़रत अलैहि र्रहमा का विसाल 1340 हिजरी माहे सफ़र में हो चूका था, जबकि हदाइक़ ए बख्शिश हिस्सा तीन के सफा 10 पर उसकी शाया करदा ने उसकी तारिख 29 ज़िल हिज्जा 1342 डाली हुवी है। यानि सरकार आला हज़रत के विसाल के 2 साल बाद।

अब मुखालफीन से मेरा सुवाल है जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की हयात ए तैय्यबा के मुनकिर हैं वह बताएं अगर बक़ोल आपके ये ऐतराज़ की बिना पर अगर आप सरकार आला हज़रत को

Scanned by CamScanner

गुस्ताख मानते हैं तो क्या इस किताब को आला हज़रत राहमहुल्लाह ने अपनी कब्रे अनवर से तरतीब दे कर छपवायी?अगर आपका जवाब है हाँ। तो तुम्हारे अक़ीदे पर ज़र्ब है की तुम्हारे अक़ीदे के मुताबिक़ मरने के बाद सरे अमल खत्म हो जाते हैं और मुर्दे कुछ नहीं कर सकते फिर ये कैसे मुमकिन की अपनी कब्रे अनवर से किताब लिख भी दे और छपवा भी दे। और अगर तुम्हारा जवाब है नहीं की उन्होंने नहीं छपवायी तो फिर तुम खुद अपने इलज़ाम में झुठे साबित हुवे और झूठों पर अल्लाह की लानत।

अब आएं इस किताब की हक़ीक़त की तरफ तो ये किताब जो हदाइक़ ए बख्शिश हिस्सा 3 के नाम से मशहूर है इसे तरतीब दी मौलाना मेहमूद अली खान साहब ने जिसमे उनसे चन्द गलतियां पेश आई जो दर्ज ज़ैल हैं-

1) उन्होंने इसका नाम हदाइक़ ए बख्शिश रखा। जो की गैर ज़िम्मे दाराना काम था। क्योंकि सरकार आला हज़रत की तस्नीफ के दोनों हिस्सों का तारीखी नाम हदाइक़ ए

Scanned by CamScanner

बख्शिश था जो 1325 हिजरी में शाये हो चुके थे।

2) इन्होंने मसूद नाभ स्टीम प्रेस के सुपुर्द कर दिया, प्रेस वालों ने खुद ही किताबत करवाई और खुद ही छाप दी। मौलाना ने इसके प्रूफ भी नहीं पढ़े।

इन गलतियों का खामियाज़ा उन्हें यूँ उठाना पढ़ा की खतीब ए मशरिक़ मुश्ताक़ अहमद निज़ामी साहब ने बम्बई के एक हफ्ता रोज़ा में एक मुरासला शाये कर दिया और मौलाना को अपनी गलती की तरफ मुतवज्जे किया।

अब जब ये बात साफ़ हो गई की ये किताब मौलाना मेहबूब साहब ने लिखी और देवबंदियों के उस वक़्त के मोलवियों ने भी यही मुहीम चलाई की मौलाना मुफ़्ती मेहबूब अली साहब ने हज़रत ए आईशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हुमा की शान में गुस्ताखी की इस लिए इन्हें मुम्बई जामा मस्जिद से बरतरफ किया जाए, जिससे साबित होता है की उस वक़्त के देवबंदी भी

Scanned by CamScanner

मुफ़्ती मेहबूब साहब ही को इस गलती का ज़िम्मेदार मानते थे फिर आज इस किताब के ज़रिये आला हज़रत पर इलज़ाम करना लोगों को फरेब देने से ज़्यादा कुछ नहीं।

जब मुफ़्ती मेहबूब अली साहब को बार बार उनकी गलती पर मुतनब्बेह किया और उन्हें अपनी गलती का अहसास हुवा तो आपने ऐलानिया तौबा की और रिसाला सुन्नी लखनऊ और रोज़नामा इंक़लाब में छपवाया। और बारहा ऐलानिया तौबा की, मुलाहिज़ा हो-

"ज़रूरी ऐलान हदाइक़ ए बख्शिश हिस्सा सोम सफा 37-38 पर बे तरतीबि से अशआर शाये हो गए थे इस गलती से बार बार फ़कीर अपनी तौबा शाये कर चूका है खुदा व रसूल जल्ले जलाला सलल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़क़ीर की तौबा क़ुबूल फरमाए आमीन सुम्मा आमीन। और सुन्नी मुसलमान भाई अल्लाह व रसूल के लिए मुआफ़ फरमाए जल्ले जलाला व सलल्लाहो अलैहि व सल्लम। फ़क़ीर ने उस वक़्त को सही तरतीब से छपवा दिया है और सात

Scanned by CamScanner

अशआर को बिलकुल ही निकाल दिया है। जिन हज़रात के पास हदाइक़ ए बख्शिश हिस्सा 3 के नुस्खा है वह पेज नं 37-38 निकाल कर फ़क़ीर को भिजवा दे और फ़क़ीर से सही पेज लेकर उसे लगा ले, और जो साहब किताब वापस करना चाहें वह फ़क़ीर के पास किताब ले आएं और उसकी कीमत फ़क़ीर से ले लें वस्सलाम अहले इस्लाम।"

(फैसला मुक़द्देसा ए शरईय्या क़ुरानिया)

अब गौर करने की बात ये है की जब मुफ़्ती मेहमूद साहब ने तौबा करली और उस दौर के देवबंदीयों ने भी इस कार गुज़ारी के लिए मुफ़्ती मेहमूद साहब पर ही इलज़ाम आइद किया था तो फिर आज सरकार आला हज़रत पर इलज़ाम क्यों? क्या ये अवाम को धोका देना नहीं है? क्या इसे ही हक़्क़ानियत कहते हैं? फैसला आप खुद कर लें।

वह अशआर आला हज़रत राह्मतुल्लाह के नहीं:-

Scanned by CamScanner

अब सवाल ये उठता है की वह अशआर जो बे तरतीबि की वजह से उस जगह छप गए तो ये अशआर आए कहाँ से? जिसे वहां छापा गया। तो ये बात ज़ेहनशीं करले की ये अशआर सरकार आला हज़रत के नहीं बल्कि सही मुस्लिम, सही बुखारी, तिर्मीज़ी शरीफ व निसाई शरीफ में मौजूद हदीस मुबारका जो हज़रत ए आईशा सिद्दीका रदीयल्लाहो अन्हो से रिवायत है की ग्यारह मुश्रिका औरतों ने ते किया की वो बहिमि तौर पर अपने शौहर के औसाफ ब्यान करेंगी और कुछ भी न छुपाएँगी उनमे से एक उम्मे ज़ारा ने अपने शौहर की दिल खोल कर तारीफ़ की। फिर अबु जराअ की बेटी का ज़िक्र करते हुवे ये अशआर कहे
(मुस्लिम अरबी मतबुआ नूर मुहम्मद कराची, जिल्द 2, सफा 288)
जिसे प्रेस में गलती से या साजिश के तहत इस किताब में छापा गया, जिसकी निशान देहि सुन्नी ओलमाओ ने ही सबसे पहले की और मुफ़्ती मेहमूद साहब ने भी उसे अपनी अना का मसला नहीं बनाया और ऐलानिया तौबा भी

Scanned by CamScanner

कर ली और उसे ऐलानिया शाया भी किया। अब यहाँ तीन बातें काबिल ए गौर हैं-

1) क़ातिब की गलती से ये अशआर बे तरतीब नक़्ल हो गए।

2) फिर भी कलाम के दरमियान दो जगह बड़े वाज़ेह व बड़े हरुफ़ में अलेहदा लिखा है।

3) फिर इसका मक़्ता भी नहीं है जैसा सरकार आला हज़रत के कलाम में होता है।

ये तीनों बातें इस बात का सबूत है की कलाम गैर मुरत्तिब और न तमाम है, बावजूद इसके जो देवबन्दी, वहाबी, इस अशआर को सय्येदि आयेशा सिद्दीका रदीयअल्लाहो अन्हो की शान में बताते हैं वह खुद उम्मुल मोमिनीन की तौहीन के मूर्तकीब होते हैं, और झूठा इलज़ाम लगाने, अवाम को धोका देने जैसे गुनाह के भी मूर्तक़िब होते हैं। न तो वह अशआर सय्येदि उम्मुल मोमिनीन की शान में लिखे न

Scanned by CamScanner

उनकी तरफ मनसूब किये। बस इतना हुवा की किताब की तबाअत पर मुफ़्ती मेहमूद साहब पूरी निगरानी न कर सके और अशआर गलत तरतीब से छप गए। ये बात साफ़ हो गई की न तो ये किताब आला हज़रत ने लिखी, न वो अशआर हज़रत ए उम्मुल मोमिनीन के लिए थे किताबत की गलती से गलत जगह अशआर शाये हो गए जिसकी ज़िम्मेदारी लेते हुवे तौबा भी की जा चुकी इसके बाद भी इलज़ाम तराशी सिर्फ वाहबियो की अपने मोलवियों की परदा पोशी से ज़्यादा कुछ नहीं।

अईय्ये किस चीज़ की पर्दा पोशी के लिए ये इल्ज़ामात लगाये गए हैं देखें-

(नमाज़ में) ज़िना के वस वसे से बीवी से मुजामेअत का ख्याल बेहतर है, और शेख या इस जैसे और बुज़ुर्गों की तरफ खुवाह म आब रिसालत सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हो की तरफ अपनी हिम्मत को लगा देना अपने बैल व गधे के ख्याल में डूब जाने से बदतर है।

Scanned by CamScanner

(इसमइल देहलवी सिरात ए मुस्तकीम)

फिर आपकी ज़ात ए मुक़द्देसा पर इल्म ए गै.ब का हुक्म किया जाना अगर बकौल ज़ैद सही है तो दरयाफ़्त तलब ये आम्र है की इस गै.ब से मुराद बाज़ गै.ब है या कुल गै.ब, अगर बाज़ उलूम ए गैबिया मुराद है तो उसमे हुज़ूर ही की क्या तख्सीस ऐसा इल्म ए गै.ब तो ज़ैद अम्र बकर बल्कि हर सबिह व मजनू बल्कि हर जमी हैवानात व बहम को हासिल है।
(मुहम्मद अशरफ अली थानवी, हिफज़ुल ईमान)

एक ज़ाकिर सालेह को मशकूफ हुवा के अहकर के घर हज़रत ए आएशा आने वाली हैं, मेरा ज़हन इस तरफ मुंतकिल हुवा (के कमसिन बीवी मिलेगी), इस मुनासबत से के हुज़ूर सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब हज़रत ए आईशा सिद्दीका रदीयल्लाहो अन्हो से निकाह किया उस वक़्त आप अलैहिस्सलाम की उम्र मुबारक 50 से ज़्यादा थी और हज़रत आएशा

Scanned by CamScanner

की बहुत कम उम्र थी यही किस्सा यहां है। (अशरफ अली थानवी, अल खतुबुल मुज़िबा सफा 15)

अपनी वालिदा को खुवाब में देखकर कोई नुत्फाये न तहक़ीक़ ही बीवी की तरफ निस्बत कर सकता है। अपने इन कुफ्रिया इबारात को छुपाने और लोगों को अपने गन्दे अक़ीदों से गाफिल रखने ही के लिए झूठे इल्ज़ामात आइद किये जाते हैं और लोगों को बरगलाया जाता है। अल्लाह ताअला ऐसे झूठे मक्कारो से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए। और फरेबियों के फरेब से हमारी हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर इलज़ाम का जवाब

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि को खुदा मानने के इलज़ाम का जवाब।

मेरे अजीज़ मोहतरम दोस्तों व बुज़ुर्गों जैसा आप लोगो को मालूम है की देवबंदीओ वहाबियों ने कुफ्रिया अकाईद छुपाने के लिए जो चाले चली है उनमे से एक ये है की सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर झूठे इल्ज़ामात आइद कर अवाम में छोड़ देना ताकि अवाम उन्ही में उलझी रहे और उनके गुस्ताखाना इबारतों और अक़ीदों पर पर्दा पोशी होती रहे इनही ऐतरज़ात में से एक ऐतराज़ ये भी आइद करते हैं की,

रज़ा खानियों का अक़ीदह है की उनका खुदा अहमद रज़ा है मोलवी अय्यूब अली राज़विया बरेलवी लिखता है

Scanned by CamScanner

ये दुवा है ये दुवा है ये दुवा तेरा और सबका खुदा अहमद रज़ा

मोलवी अय्यूब अली बरेलवी साहब की ये मंक़बत के इस शेर को दिखा कर देवबंदी अक्सर कम इल्म सुन्नियों को बहकाने और उन्हें बरगलाने का काम करते हैं खेर आये ज़रा इस शेर की हक़ीक़त और देवबंदियों की अय्यारी का खुलासा करते चलें।

अगर वहाबी देवबंदियों का इस शेर पर जो इलज़ाम है की बरेलवियों ने अपना खुदा इमाम अहमद रज़ा साहब किब्ला को बना लिया है तो ज़रा बताएं इन लोगों का ईमान, इस क़दर कमज़ोर है की ये अपनी नमाज़ बरैलवियों (अहले सुन्नत वल जमात) के पीछे पढ़ने में कोई खराबी महसूस नहीं करते। क्या इनके नज़दीक दो खुदा का तसव्वुर या अक़ीदह रखने वालों के पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है? अगर नहीं तो दिखाए अपने अक़बीरेन का फतवा की किसी वहाबी देवबंदी मोलवी ने

Scanned by CamScanner

फतवा दिया हो की इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल ए बारेलवी के मानने वालों के पीछे नमाज़ नहीं होती। खेर ये नहीं ला सकते क्योंकि ये खुद जानते हैं इनके बोहतान सिर्फ और सिर्फ मक्र व फरेब का मजमुआ से ज़्यादा कुछ नहीं।

अब आये उस शेर पर रौशनी डालें वहाबी देवबंदी इस शेर में तेरा से मुराद किसको लेते हैं ये तो वह खुद बताएं, और जब इस मंक़बत के कुछ और अशआर पढ़े जायेंगे तो वहां से ये बात साफ़ ज़ाहिर हो जायेगी के इसमें वहाबियों ने सिर्फ मुनाफिकाना चाल से ज़्यादा कुछ नहीं चली चलिए इसके कुछ अशआर मुलाहिज़ा हों,

तेरा झंडा गढ़ गया अहमद रज़ा
तेरा सिक्का जम गया अहमद रज़ा
तेरा आदा खौफ से थर्रा गया,
जब तेरा नेजा उठा अहमद रज़ा

इन अशआर से साफ़ ज़ाहिर हो गया की यहाँ तेरा से मुराद इमाम ए अहले सुन्नत फ़ाज़िल ए

Scanned by CamScanner

बरेलवी रहमतुल्लाह अलैहि को मुखातिब किया गया है अब ज़रा उस शेर को मुक़म्मल पढ़ा जाए।

तेरा (अहमद रज़ा) हमसर ज़ेरे क़ुदरत है मगर
हमज़मा हरगिज़ न था अहमद रज़ा
ये दुवा है ये दुवा है ये दुवा
तेरा (अहमद रज़ा) और सबका खुदा अहमद रज़ा
के तेरी नस्ल ए पाक से पैदा करे कोई
हम रुतबा तेरा अहमद रज़ा

शायर ने सबसे पहले दुवा फ़रमाई की, ये दुवा है ये दुवा है ये दुवा फिर बताया की ये दुवा किस्से है तेरा (अहमद रज़ा का) और सबका खुदा, अहमद रज़ा हम पहले बता चुके की तेरा से मुराद सरकार आला हज़रत हैं और जब ये इस मनक़बत को पढ़ कर वाज़ेह हो गयी की तेरा से मुराद कोन है तो अब इस शेर से ये मतलब लेना की इमाम ए अहले सुन्नत को खुदा बताया धोका नहीं तो और क्या है? आगे

Scanned by CamScanner

फ़रमाया की, की तेरी नस्ल ए पाक से पैदा करे कोई हम रुतबा तेरा अहमद रज़ा
बात रोज़ाए रोशन की तरह साफ़ है की शायर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुवा फर्मा रहा है की इमाम अहमद रज़ा की आल से कोई उनका हम रुतबा पैदा हो नाकि इमाम अहमद रज़ा साहब को खुदा बताया गया है।

इतनी आसान सी उर्दू अगर समझ नहीं आई, और ये वाक़ई इसे कुफ्रिया अशआर कहते हैं तो अब तक इन्होंने कुफ्र का फतवा क्यों नहीं दिया और क्यों ये अहले सुन्नत वल जमाअत बरेलवी मकतब ए फ़िक्र पर कुफ्र का फतवा क्यों नहीं देते? क्यों हमारे पीछे नमाज़ पढ़ने आ जाते हैं? पता चला कुछ तो हे राज़ है जिसकी पर्दा पोशी है। आए देखें कोन किसको खुदा बना रहा है,

मर्सिया गंगोही में इनके आलिम मेहमूद हसन देवबंदी लिखता है,

ज़बाँ पर अहले अह्वा की हे क्यों उगल व हुब्ल,
शायद उठा आलम से बानी इस्लाम का सानी

Scanned by CamScanner

कोई।

खुद देवबंदियों की किताबो से ज़ाहिर है की इस्लाम का बानी या तो अल्लाह व रसूलुल्लाह है अब ज़रा मेहमूद हसन देवबंदी के इस शेर पर गौर करिये क्या उन्होंने रशीद अहमद गंगोही को बनिए इस्लाम का सानी नहीं बताया? और सानी के माने देखें
जो तरतीब में एक के बाद हो तीन व तीसरे से पहले, दो या दूसरा।
अब ज़रा इन मानों को उस शेर में रखिए और ये ज़हन रहे की बनिए इस्लाम अल्लाह व उसके रसूल ही को कहा जायेगा तो जब अल्लाह की ज़ात के साथ सानी को लगाये तो शिर्क और अगर रासूलुल्लाह के साथ लगाएं तो कुफ़्र। अब बताओ किसने दूसरा खुदा तसव्वुर किया? किसने नबी अलैहिस्सलाम के साथ एक और नबी को तसव्वुर किया। बात साफ़ ज़ाहिर है जब कोई गुनहगार पकड़ाता है तो वह सब पर इलज़ाम आइद करता है की उसके गुनाह पर पर्दा ढक जाये। जब सरकार आला हज़रत

Scanned by CamScanner

और उनके मानने वलो ने वहाबी देवबंदीयो के अक़ाईद इ कुफ्रिया खोलने शुरू किये तो इन्होंने बेजा और झुटे इलज़ाम लगा कर अपने कुफ्र पर पर्दा डालने की नाकाम कोशिश शुरू की, और अवाम को बरगला कर राहे हक़ से हटा कर नजद के फ़ितने से जोड़ने की मुहीम में लग गए, लेकिन जैसा की क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया लानतु ल्लाही अलल काज़ेबीन इसी आयत के हर बार मिसदाक बने।

अल्लाह ताला ऐसे मक्कार व फरेबी लोगों से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर इलज़ाम के जवाब

आला हज़रत ने हुज़ूर के इमाम बनने का दावा किया

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर लगाए जाने वाले इल्ज़ामात में से एक इलज़ाम ये भी है की आला हज़रत ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम का इमाम बनने का दावा किया चलिए ज़रा इस ऐतराज़ की हक़ीक़त मालूम करें। वाकिया दर असल यु है:-

"मोलवी बरकत अहमद साहब के इंतिक़ाल के दिन मोलवी सैयद अमीर अहमद साहब मरहूम खुवाब में ज़ियारत ए अक़दस हुज़ूर सरवरे आलम सलल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ हुवे के घोड़े पर तशरीफ़ लिए जाते हैं, अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हुज़ूर कहाँ तशरीफ़ लिए जाते हैं? फ़रमाया: बरकत अहमद की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ने, अल्हम्दुलिल्लाह ये जनाज़ा

Scanned by CamScanner

मुबारक़ मेने पढ़ाया है।"
(अल मलफ़ूज़ हिस्सा 2)

हए अपनी अदावत में तुम इस क़द्र बढ़ गए,
के झूठ कहते हुवे भी शर्म तुम्हे आती नहीं

देवबंदी वहाबी हमेशा अपने दजल व फरेब से कम इल्म भोले भले सुन्नियों को फरेब कारियां दे कर बहकाने में लगे रहते हैं इस वाकिये में भी साफ़ झूठ बांध कर दावा किया की आला हज़रत ने नबी का इमाम होने का दावा किया झूटों पर अल्लाह की लानत इस इबारत में कहीं भी हुज़ूर आला हज़रत ने ये नहीं फ़रमाया की में इमाम था, और सरकार मुक़तदि। और खुवाब भी आला हज़रत ने नहीं बल्कि मोलवी सैयद अमीर अहमद साहब ने देखा और बयान फरमाया। हदीस मुबारका है रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने खुवाब में मेरी ज़ियारत की उसने मेरी ही ज़ियारत की क्योंकि शैतान मेरी शक्ल में नहीं आ सकता बिल फ़र्ज़ यहाँ ये मान भी लिया

Scanned by CamScanner

जाये की इस जनाज़े की ज़ाहिरी नमाज़ सरकार आला हज़रत ने पढ़ाई तो यहाँ ये कहाँ लिखा है की हुज़ूर मुक़तदि बने। अईय्ये एक हदीस ए मुबारका पर नज़र डालें:-

सैय्यद ए सिद्दीक़ ए अक़बर रदियल्लाहो अन्हो एक मर्तबा हुज़ूर की गैर हाज़री में नमाज़ पढ़ा रहे थे की हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुवी हज़रत ए सिद्दीक़ ए अक़बर ने पीछे हटना चाहा तो आप अलैहिस्सलाम ने मना फ़रमाया और सरकार अलैहिस्सालम ने हजरत सिद्दीक़ ए अक़बर के बायीं तरफ होकर नमाज़ शुरू फरमाते हैं, हदीस मुबारक़ के अलफ़ाज़ हैं की "हमारे इमाम अबु बक़र रदियल्लाहो अन्हो थे और अबु बक़र रदियल्लाहो अन्हो के इमाम इमामुल अम्बिया अलैहिस्सलाम थे"

(बुखारी शरीफ, मदारेजुन्नबुवा)

एक और हदीस मुलाहिज़ा हो,

अशरफ अली थानवी अपनी किताब करामते सहाबा रदियल्लाहो अन्हो में इसे नक़ल किया जिसके मुताल्लिक लिखते है सही और मुस्तनद

Scanned by CamScanner

हदीस से इंतिखाब

"करामते हज़रत ए राबेह रदियल्लाहो अन्हो
हज़रत ए राबेह बिन हराश कहते हैं हम चार
भाई थे और हमारे बड़े भाई हज़रत ए राबेह
पक्के नमाज़ी और बड़े रोज़े दार थे सर्दियों
गर्मियों में भी वह नफ्ले पढ़ते और रोज़ा रखते,
जब उनका इंतिक़ाल हुवा हम सब उनके पास
इकट्ठा थे और हम उनके लिए कफ़न का
कपड़ा के लिए आदमी भी भेज चुके थे, के एक
मर्तबा उन्होंने मुँह से कपड़ा हटा कर कहा,
अस्सलाम ओ अलैकुम हम लोग अबस क़ोम के
है जवाब दिया व अलैकुम अस्सलाम बिरादरान
ए अबस क्या मौत के बाद भी तुम बात चीत
करते हो? हज़रत ए राबे ने जवाब दिया हाँ
तुमसे जुदा होकर जब में परवर दिगारे आलम
से मिला तो मेने उसे गज़बनाक नहीं देखा,
उसने मुझे रहमतों के बादल बरसा कर जन्नत
की खुशबुएँ, जन्नत की रोज़ी, जन्नत का
लिबास और रेशमी कपडे मुरहमत फरमाए
हज़रत ए अबु क़ासिम राहमतुलिल आलमीन
सलल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरी नमाज़ पढ़ाने

Scanned by CamScanner

के लिए मुन्तज़िर हैं बस अब देर मत लगाओ जल्दी करो। इसके बाद वह इस तराह खामोश हो गए की जैसे तशत में एक कंकरी गिर जाए यानि थोड़ी देर के लिए उनकी ज़बान ने हरकत की और फिर वह बिलकुल खामोश व बेजान हो गए। और फिर उनके कफ़न दफन का इंतिज़ाम किया गया। ये वाकिया जब हज़रत ए आईशा सिद्दीक़ा रादियाल्लाहओ अन्हो को सुनाया गया तो उन्होंने फ़रमाया हाँ मुझे याद है एक मर्तबा हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था की मेरी उम्मत में ऐसे भी लोग हैं जो मरने के बाद गुफ्तगू करते हैं
(करामते सहाबा रादियालहो अन्हो ब हवाला अह्मर्तुल मुहदात सफा 303)

एक और हदीस मुबारका मुलाहिज़ा हो
हज़रत ए अबु उबेदह बिन जरहा ने खुवाब में देखा की हज़रत ए अबु बक़्र रदियल्लाहो अन्हो की नमाज़ ए जनाज़ा में सरकार अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये,
हज़रत ए सिद्दीक़ ए अक़बर रदियल्लाहो

Scanned by CamScanner

अन्हो की नमाज़ ए जनाज़ा हज़रत ए उमर राढीयल्लाहो अन्हो ने पढ़ाई थी।

मलफुजात शरीफ में कही ये नहीं लिखा की हुज़ूर अलैहिस्सलाम की इमामत सरकार आला हज़रत ने की ये सिर्फ वहाबियों का दजल व फरेब है, अब हदीस मुबारका पर गौर किया जाए की इन अ हदीस मुबारका में जिसमें रसूलुल्लाह ने हज़रते सिद्दीक़ अक़बर और हज़रत ए राबेह रदियल्लाहो अन्हो की नमाज़ ए जनाज़ा में शिरकत की ठीक वैसी ही थी जैसी हज़रत ए सिद्दीक़ अक़बर की हयात में सहाबा इकराम रिद्वानुल्लाहि आलिही की नमाज़ में थी, के हज़रत सिद्दीक़ अक़बर रदियल्लाहो अन्हो तमाम सहाबा के इमाम और हुज़ूर अलैहिस्सलाम हज़रत ए सिद्दीक़ अक़बर रदियल्लाहो अन्हो के इमाम। क्या ये कोई गुस्ताखी है बिलकुल नहीं ये तो रसूलुल्लाह की अपने उम्मती पर शफ़क़त है।

ठीक इसी नक़्शे को ज़हन में रखें और मलफुजात के उस वाकिये को ज़हन में रखे की

Scanned by CamScanner

हुज़ूर आला हज़रत मुक्तदियों के इमाम और हुज़ूर अलैहिस्सलाम आपके इमाम। लेकिन अफ़सोस वहाबियों की अकलों पर बिला वजह नहीं बल्कि बुग्ज़ो हसद में ये इलज़ाम बांधना ये पक्की मुनाफ़िक़त है, इन अहदीस ए मुबारका से ये तो साबित होता है की आप अलैहिस्सलाम किसी के जनाज़े में तशरीफ़ ला सकते हैं लेकिन इस पर ये इमकान के आप अलैहिस्सलाम उसी वक़्त जनाज़े में शामिल होते है या बातनि तौर पर इमामत फरमाते हैं या अलैहिदा से नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाते हैं ये क़यास है लेकिन इस पर ये क़यास ए फसीदा करना की आपके कोई इमाम बने ये मुनाफ़िक़त सिर्फ अवाम को अपनी छुपी हुवी गुस्ताखीया छुपाने के लिए हैं, देखिये इनके मशहूर देवबंदी अलीम हुसैन अहमद मदनी अपनी किताब शेखुल इस्लाम के हैरत अंगेज़ वाकियात जिसके मुरत्तिब अबु अल हुसैन हैं में लिखते हैं की,

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम किसी शहर में जामा मस्जिद के क़रीब एक हुजरे में तशरीफ़ फर्मा हैं, और मुत्तसिल एक दुसरे कमरे में क़ुतुब

Scanned by CamScanner

खाना है हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने क़ुतुब खाना से एक मुजल्लद किताब उठाई जामा मस्जिद में जुमा मुसल्लिन का बड़ा मजमा था मुसल्लिन ने फ़क़ीर से फ़रमाईश की के तुम हज़रत खलिलुल्लाह से फ़रमाईश करो की हज़रत मदनी को जुमा पढाने का इरशाद फरमाए। फ़क़ीर ने जुरअत करके अर्ज़ किया तो हज़रत खलीलुल्लाह ने हज़रत मदनी को जुमा पढ़ाने का हुक्म दिया मौलाना मदनी ने ख़ुत्बा दिया और नमाज़ जूमा पढ़ाई हज़रत खलीलुल्लाह ने मौलाना की इक्तिदा में जुमा अदा किया।

(शेखुल इस्लाम के हैरत अंगेज़ वाकिये सफा 164)

सुना जंगल रात अँधेरी छाई बदरी काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरो की रखवाली है

लगाओ अपने शेखुल इस्लाम पर फतवा जहाँ खुले अलफ़ाज़ मे खलिलुल्लाह के इमाम बनने का दावा है।

Scanned by CamScanner

अफ़सोस सद अफ़सोस अवाम ऐसे झुटे मक्कार फरेबी लोगों के पीछे न सिर्फ नमाज़ पड़ती है बल्कि उनकी नमाज़ो और चहरे को देख कर धोका खा इनके साथ हो लेती है। ऐसे मक्कार, झूठे लोगों के फारैब से अपने ईमान की हिफाज़त करें, और ओलमाए अहले सुन्नत पर लगने वाले झुटे इल्ज़ामात की हकीकत मोतबर अलीम से जाने। मोमिन की नमाज़ इतनी कमज़ोर नहीं की हर किसी के पीछे हो जाये।

मेरे ईमान की अभी हरारत बाक़ी है,
ये पहचान लेता है मोमिन व मुनाफ़िक़ को

Scanned by CamScanner

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर इल्ज़ाम के जवाब

उल्लू खाना जायज़?

सरकार आला हज़रत पर लगाए जाने वाले झुटे और बे बुनियादी इल्ज़ामात में से एक इलज़ाम ये भी लगाया जाता है की आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने उल्लू को हलाल लिखा है आईय्ये इस पर रौशनी डालें।

ऐतराज़:-
आला हज़रत ने उल्लू को हलाल कहा है (फतावा राज़वीय जिल्द 20, सफा 134, 313)

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि के उल्लू से मुताल्लिक 2 फतवे हैं जिसमे एक पर देवबंदी और वहाबी ऐतराज़ उठाते हैं आईय्ये इस पर नज़र डालें।
सरकार आला हज़रत से इमदादुल मुस्लेमीन

Scanned by CamScanner

जो डिप्टी इमदाद अली की किताब है के मुताल्लिक सवाल हुवा की इसमें बोम यानि उल्लू हलाल लिखा है जिसकी दलील में मुसन्निफ़ इमदादुल मुस्लेमीन मे फतावा आलमगीरी, हाशया तहतावि, फतावा शामी, मीज़ानुल अक़बर और हयातुल हैवान के हवाले दिए हैं।

इस पर साइल ने सवाल किया की-

इस मसले में जो तहक़ीक़ हो बयान फरमाए के वहाबी नजदियों का सच झूठ सामने आ जाये दरअसल नजद के फ़ितने के पैरो कारों का ये झूठा और जाहिलाना इलज़ाम है की फिक़् की किताबो में उल्लू को हलाल लिखा है इन अजहलो को ये भी इल्म नहीं की बोम लफ्ज़ अरबी में उल्लू के लिए मख़्सूस नहीं है बल्कि रात में निकलने वाले परिंदों के लिए इस्तेमाल होता है देखें हयातुल हैवान अब सरकार आला हज़रत की असल इबारत की तरफ आते हैं।

सरकार आला हज़रत ने जवाब में शुरू ही में फरमाया की-

फतावा आलमगीरी की इबारत जो इमदादुल

Scanned by CamScanner

मुस्लेमीन में नक़ल की गयी है उसमे लफ्ज़ कील वाके है आलम गीरी की इबारत नक़ल की गयी और कहा गया की ये लफ्ज़ (कील) क़ोल के ज़ोफ़ यानि कमज़ोर होने पर दलालत करता है, की इसकी तरफ बाज़ गए हैं अक्सर इसके खिलाफ हैं, और हयातुल हैवान का हवाला तो सिरे से गलत है इसमें कहीं नहीं लिखा की हंफिया हलाल जानते हैं इसमें सिर्फ शाफईय्या के दो क़ोल नक़ल हैं

इसके बाद असल इबारत हयातुल हैवान की नक़ल की जो बोम के मुताल्लिक साफ़ लिखा है की हराम है हां शाफईय्या के दो क़ोल नक़ल किये है जिसमे एक में हलाल एक में हराम लिखा है।

इसके बाद सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने फतावा आलम गीरी, तहतावि, फतावा शामि, मीज़ान में जो हदीस ए मुस्तफा सलल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुताबिक़ क़ोल है नक़ल फरमाए के, हर परिंदह जो पंजे से शिकार करता है हराम है, जैसे हर दरिंदा जो दांत से शिकार करता है हराम है

Scanned by CamScanner

क़ुतुब ए फिक की इन इबारात और मिज़ानुल अक़बर इमाम शोअरानी की इबारत जो ये है:- इन्ही मसाइल से है इमाम अबु हनीफा, इमाम शाफ़ई व इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैही का इत्तिफ़ाक़ है की हर कील वाला दरिंदा व हर पंजे वाला परिंदा हराम है।

से ये बात साफ़ हो गयी की शाफैआ के 2 क़ोल में से सही क़ोल हराम का है। इन इबारात से उल्लू की हुरमत साबित होती है और कोई शुबह नहीं रहता की अहनाफ के नज़दीक उल्लू हराम है, आगे सरकार आला हज़रत फरमाते है- में कहता हूँ, के यूँ ही क़ुतुब ए तिब्ब (यूनानी और डॉक्टरी इलाज मुअलिजा से मुताल्लिक) से साबित है की उल्लू खाने वाला उल्लू हो कर रह जाता है "वल अयाज़बिल्लाहि रब्बिल अलामीन"

और आगे फ़रमाया की उल्लू संग दिल परिंदा है और इसे खाने वाला भी संगदिल हो जाता है की उस पर कोई नसीहत काम नहीं आती, और आगे क़ुतुब ए मुबारक़ और शिकारी पेशा लोगों की गवाही से साबित किया की

Scanned by CamScanner

उल्लू शिकारी परिंदा है और क़ुतुब ए मुबारका से ये भी साबित किया की फिक्र की किताबो में जो लफ्ज़ बोम जो अरबी लफ्ज़ है इसका इतलाक़ सिर्फ उल्लू पर नहीं होता बल्कि रात में निकलने वाले दीगर परिंदों पर भी होता है।

इस फतवे से अच्छी तरह वाज़ेह हो जाता है की इसमें कही उल्लू को हलाल साबित नहीं किया गया बल्कि तमाम दलील उल्लू को हराम साबित करती हैं,बल्कि ये भी वाज़ेह कर दिया की फिक्र की किताबो में जहाँ कहीं बोम का लफ्ज़ इस्तिमाल हुवा वहां मुराद उल्लू नहीं बल्कि रात में निकलने वाले दीगर परिंदे हैं जिनके शिकारी पंजे नहीं होते।

अब सवाल ये उठता है की इतने वाज़ेह फतवे के बावजूद वाहबिया ऐसा झूठा एतराज़ क्यों उठाते हैं तो यहाँ ये जान लेना चाहिय्ये की इससे वो अपनी असलियत ही ज़ाहिर करते हैं जैसा हदीस ए मुबारका व क़ुरआन मजीद से साबित होता है की मुनाफ़िक़ यही चाहते हैं की मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले और ये मुनाफिक़ो की निशानी है की झूठ कसरत से

Scanned by CamScanner

बोलता है,बारहा ये बात साबित की गई है की ये लोग झुठे है और बार बार झूठे साबित होने के बाद भी अपने झूठ से बाज़ नहीं आते।
अल्लाह ताला ऐसे मक्कारों से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर इलज़ाम के जवाबात

आला हज़रत और अशरफ अली थानवी एक ही मदरसे में पड़े

सरकार आला हज़रत पर लगाये जाने वाले बोहतनो में से एक बोहतान ये भी है की-
आला हज़रत और अशरफ अली थानवी एक ही मदरसे देवबंद से पढ़ते थे, एक मर्तबा दोनों में झगड़ा हो गया, आला हज़रत पठान थे गुस्से के तेज़ थे उन्होंने अशरफ अली थानवी को काफिर कह दिया, वह अपनी बात पर इस क़दर जमें रहे की उम्र भर उन्हें काफिर कहते रहे।

देवबंदियों का ये झूठ इस क़द्र फेमस है की अक्सर वहाबी इस झूठ को फैलाते हुवे दिख जाते हैं, अईय्ये इनके इस इलज़ाम में कितनी हकीकत है जाएजा लिया जाए।
ये ऐतराज़ दो ऐतराज़ों का मजमुआ है,

Scanned by CamScanner

1) आला हज़रत और अशरफ अली थानवी एक ही मदरसे में एक साथ पढ़ते थे।
2) आला हज़रत ने गुस्से की बिना पर अशरफ अली थानवी को काफिर कहा।

क्या वाक़ई आला हज़रत और अशरफ अली थानवी एक साथ पढ़ते थे?

जवाब:-

ये एक सफ़ेद झूठ से ज़्यादा कुछ नहीं जो देवबंदियों की तरफ से फेलाया जाता है अईय्ये हम किताबो के हवाले से जाने की आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि की, और अशरफ अली थानवी की उम्र में किस क़द्र फ़र्क़ है,

मोलवी अहमद रज़ा खान बरेलवी बिन मोलवी नकि अली खान, बिन मोलवी रज़ा अली खान, मुतवत्तिन बरेली रोहल खण्ड ने बतारिख 10 शव्वाल 1272 हिजरी, में दुनिया में क़दम मुबारक रखा।

(हयात ए आला हज़रत, मोलाना ज़फर उद्दीन रज़वि क़िबला)

मोलाना ज़फर उद्दीन रज़वि साहब आला

Scanned by CamScanner

हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि के ख़ास शागिर्दों में से थे और आपके खलीफा भी हैं, आला हज़रत के भतीजे और आपके शागिर्द और खलीफा, हज़रत ए हसनैन रज़ा खान अपनी किताब सीरत ए आला हज़रत में भी आपकी तारीखे पैदाइश 10 शव्वाल 1272 हिजरी लिखी।

अब अईय्ये अशरफ अली थानवी साहब की तारीख ए पैदाइश मालूम की जाए।

हज़रत ए वाला की विलादत ए ब सआदत 5 रबी उस्सानी 1280 हिजरी को चार शम्बा के दिन ब वक़्त ए सादिक़ को हुइ।

(अशरफ उस्सवाने, सफा 16, खुवाजा अजीजुल हसन मजज़ूब)

ये अशरफ अली थानवी साहब के ख़ास खलीफा में से हैं, उसी किताब के कवर पर लिखा है अकाबिर ए खुल्फा यानी ये उनके ख़ास खलीफा की गवाही है। यहाँ ये बात साफ़ हो जाती है की आला हज़रत और अशरफ अली थानवी की उम्र में 8 साल का फ़र्क़ था। अब अईय्ये जाने की आला हज़रत ने फरागत कब

Scanned by CamScanner

हासिल की और अशरफ अली थानवी ने कब मदरसए देवबंद में दाखिला लिया।

14 शाबान 1286 में आला हज़रत आलिम बन कर फारिग हो चुके थे
(हयात ए आला हज़रत, मोलाना ज़फर उद्दीन साहब किब्ला)

14 साल की उम्र में सरकार आला हज़रत फरागत हासिल कर आलिम बन चुके थे। थानवी साहब और आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैही की उम्र में 8 साल का फ़र्क़ था इस लिहाज़ से आला हज़रत जब आलिम बन चुके थे तब थानवी साहब की उम्र थी 6 साल हुई। ये बात साफ़ हो गयी की वहाबी देवबंदियों ने जो झूठ का किला कायम किया उसकी एक दिवार साफ़ गिर चुकी की आला हज़रत और थानवी साहब एक साथ मदरसे देवबंद में पढ़ते थे अब अईय्ये जाने की थानवी साहब ने कब मदरसा ए देवबंद में दाखिला लिया।
मदरसा ए देवबन्द में 5 साल ब सिलसिला तालिब ए इल्मी रहना हुवा 1295 हिजरी में वहां दाखिल हुवे, और शुरू 1301 हिजरी में

Scanned by CamScanner

फारिग हो गए।
(अशरफ उस्सवाने जिल्द 1, पेज 24)

जब अशरफ अली थानवी साहब मदरसा ए देवबंद में दाखिला ले रहे थे उस वक़्त आला हज़रत सरकार की उम्र मुबारक 23 साल थी और आप इस उम्र तक 75 किताबें लिख चुके थे। जिस वक़्त आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैही ने फरागत हासिल की उस वक़्त तक तो थानवी साहब ने पढ़ना भी शुरू नहीं किया था फिर 6 साल की उम्र में थानवी साहब उस वक़्त करते क्या थे? अईय्ये उन्ही के घर की किताबो से देखे-

मुझे एक खेल और याद आया एक मर्तबा मेरठ में ऐसा हुवा की बारिश के अय्याम थे बाहर सहन में लेटा करते थे, वालिदा साहिबा का इंतीकाल हो चुका था, हम लोग वालिद साहब के पास रहते थे तीन चार पाई बराबर में रखी हुइ थी, वालिद साहब की और हम दोनों भाईयों की, मेने रस्सी लाकर सब के पाये मिलाकर कस कर बाँध दिए, और पढ़ कर सो गए, इत्तिफ़ाक़ से बारिश आई तो वालिद साहब उठे

Scanned by CamScanner

और हमको उठाया, बचपन की नीन्द थी उहू करके फिर सो गए। वालिद साहब झुंजलाये नहीं उठते तो पढ़े रहने दो,फिर अपनी चार पायी घसीटी अब वहां तीनो चार पाई एक साथ चली आ रही है, फिर अब्बु गुस्सा हुवे फ़माया ऐसी ऐसी हरकते करते हैं अब सब भीग रहे हैं चाकू ढूंढा इत्तिफ़ाक़ से चाकू भी न मिला आखिर खुद ही बावर्ची खाने से चाकू लाये और रस्सी को काटा तब जाकर चार पाईय्या उठ सकी सही तो याद नहीं इस हरकत पर कोई चपत लगी थी के नही
(मलफुज़ात ए हकीमुल उम्मत, जिल्द 2, किश्त 5, सफा 474)

जब सरकार आला हज़रत फ़ारिग. हो चुके थे उस वक़्त थानवी साहब अपने वालिद साहब की चार पायी बाँध कर उन्हें परेशान कर रहे थे, एक और वाकिया 7-8 साल की उम्र में थानवी साहब का ज़ेरे नज़र पेश है-
एक रोज़ में पेशाब कर रहा था भाई साहब ने आकर मेरे सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया, एक रोज़ ऐसा हुवा भाई पेशाब कर रहे

Scanned by CamScanner

थे मेने उनके सर पर पेशाब करना शुरू कर दिया, इत्ती फाक से उस वक़्त वालिद साहब तशरीफ़ ले आए, फ़रमाया ये क्या हरकत है? मेने अर्ज़ किया एक रोज़ उन्होंने मेरे सर पर पेशाब किया था, भाई ने इसका बिलकुल इनकार कर दिया, मुख्तसर सी पीटाई हुई इस लिए की मेरा दावा तो दावा ही रह गया सबूत कुछ न था, गरज जो किसी को न सूझती थी वह हम दोनों भाईयो को सूझती थी।
(मलफुजात ए हकीम उल उम्मत जिल्द 2, किश्त 5, सफा 475)

जब सरकार आला हज़रत अलिमि फरागत हासिल कर चुके थे उस वक़्त थानवी साहब अपने भाई के सर पर पेशाब कर रहे थे, ये बात अब साफ़ हो चुकी की थानवी साहब और आला हज़रत ने एक साथ तालीम नहीं ली ये सिर्फ एक झूठ है इससे ज़्यादा कुछ नहीं अब आएं इसी ऐतराज़ के दुसरे बोहतान की तरफ-

Scanned by CamScanner

क्या आला हज़रत ने गुस्से में थानवी साहब को काफिर कहा?

जवाब:-

ये भी झूठ से ज़्यादा कुछ नहीं सरकार आला हज़रत ने थानवी साहब की जिस इबारत पर कुफ्र का हुक्म ज़ाहिर किया वह इबारत कुफ्रिया ही थी आला हज़रत ने काफिर नहीं बनाया बस हुक्म ए शराह सुनाया, अपनी इस इबारत की बाईस वह खुद कुफ्र की ज़द में आ गए। अईय्ये ज़रा इनकी इस इबारत पर नज़र डालें-

आपकी ज़ात ए मुक़द्दसा पर इल्म ए गै.ब का हुक्म किया जाना अगर बक़ोल ज़ैद सही हो तो दरयाफ़्त तलब ये अम्र है इस गै.ब से मुराद बाज़ गै.ब है या कुल गै.ब अगर बाज़ उलूम ए गैबिया मुराद है तो इसमें हुज़ूर सलल्लाहो अलैही व सल्लम ही की क्या तख्सीस है ऐसा इल्म ए गै.ब तो ज़ैद अमर व बकर हर सबिह व मजनू बल्कि जमी हैवानात को भी हासिल है क्योंकि हर

Scanned by CamScanner

शख्स को किसी न किसी ऐसी बात का इल्म होता है जो दुसरे शख्स से मख़फ़ी है। (हिफज़ुल ईमान,सफा 15)

थानवी साहब ने यहाँ हुज़ूर के लिए बाज़ उलूम ए गैबिया माना जैसा की उन्होंने इसी ईबारत में साफ़ लीखा की हर शख्स को किसी ऐसी बात का इल्म होता है जो दुसरे से मख़फ़ी हो अब इस बाज़ इल्म ए गै.ब को इन्होंने केसा माना? तो वह भी इसी इबारत में मौजूद है ऐसा इल्म ए गै.ब तो ज़ैद अमर बकर(ये उर्दू की एक कहावत है जिसका मतलब होता है हर एरा गेरा) हर सबिह व मजनू(बच्चा व पागल) बल्कि जमी हैवनात(तमाम जानवरो) को भी हासिल है। कहिय्ये नबी अलैहिस्सलाम के किसी वस्फ ए पाक को ऐसा बताना जैसा अशरफ अली साहब ने बताया तौहीन है या नहीं? कहिय्ये सिफत ए कमाल में मखलूक की जो सबसे कमाल की सिफ़त है वह इल्म ही है उस इल्म को वह भी किस मुक़द्दस शख्सियत का इल्म जिनके लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़ुरआन ए

Scanned by CamScanner

मजीद में इरशाद फर्मा रहा है वर फाना लका ज़िकरक ए मेहबूब हमने तुम्हारे ज़िक्र को बुलंद फर्मा दिया तौहीन है या नहीं है? मुहक़्क़ीक़ीन फरमाते है हुज़ूर अलैहिस्सलाम की नालेन पाक को कोई जुतिया कह दे तो वह काफिर है कहिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इल्म जो उनकी सिफत ए कमाली है को जानवरो पागलो बच्चों जैसा कहना तौहीन है या नहीं जब रसूलुल्लाह की नालेन मुबारक को हुज़ूर अलैहिस्सलाम से निस्बत होने की बिना पर उसका इतना अहतराम की इसकी निस्बत कोई ऐसा जुमला जिसकी निस्बत गुस्ताखी की तरफ हो करने पर बन्दा काफ़िर हो जाता है तो उस कमाल ए इल्म जो मख्लूक़ में किसी के पास नहीं न क़यामत तक किसी के पास होगा उसकी निस्बत जानवरो पागलो बच्चों की तरफ करना गुस्ताखी नहीं तो क्या है? बिला शुबह ये सख्त तरीन गुस्ताखी है और जैसा की शराह का हुक्म है जो रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में अदना सी गुस्ताखी करे वो काफिर है। बस इसी हुक्म को हुज़ूर आला हज़रत ने

ज़ाहिर किया।

अगर ईमान की थोड़ी भी हरारत बाकी हो तो ऐसे झूठे दज्जालो से अपने ईमान की हिफाज़त करो। दुवा है मोला झुठो और गुस्ताख़ ए अम्बिया अलैहिस्सलाम से हमारे ईमान की हिफाज़त फ़रमाए, लोगो को हक़ समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

Scanned by CamScanner

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर ऐतराज़ के जवाब

वसाया शरीफ में फातेहा के खाने की फेहरिस्त पर ऐतराज़ का जवाब

सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि पर लगाये जाने वाले ऐतराज़ में से एक ऐतराज़ आपकी वसीयत पर भी उठाया जाता है, जो दर्ज ज़ैल है-

अहमद रज़ा खान साहब को खाने पीने का खूब शोक था पेट पूजा के लिए मरते वक़्त भी खुद के लिए खाने पीने की एक तवील फेहरिस्त लिख गए देखो अहमद रज़ा साहब की वसाया

इस किस्म का ऐतराज़ अक्सर वहाबियों के जाहिल नाम निहाद मोलवी अवाम में धोका देने के लिए करते हैं और फिर जाहिल देवबंदी अवाम बिना मुताला किये इन ऐतराजात को सच मानकर अक्सर भोले कम इल्म सुन्नियों

Scanned by CamScanner

को ऐसे ऐतराज़ कर धोका देते और बद गुमानी फैलाते हैं, अईय्ये इस ऐतराज़ का जायज़ा लें।

क्या आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा साहब ने खाने पीने की चीज़ें वसीयत की?

सरकार आला हज़रत ने जो वसीयत की उसमे कुछ गिज़ाओं का ज़िक्र आता है जो ये हैं- ऐजा से अगर बतबियत खातिर मुमकिन हो तो फातिहा के लिए हफ्ता में 2-3 बार इन अश्या से भी कुछ भेज दिया जाए दूध का बर्फ खाना साज़, अगर भैंस के दूध का हो, मुर्ग की बिरियानी, मुर्ग पुलाव, खुवाह बकरी का शामि कबाब, पराठे और बालाई, फिरिनी आरद अर्द की फरैरि दाल मै अदरक व लवाज़िम, गोश्त भरी कचौरियां व सेब का पानी, अनार का पानी सोडे की बोतल, दूध का बर्फ, अगर रोज़ाना एक चीज़ हो सके कर दिया करो,जैसा मुनासिब जानो, मगर बतौर ए खातिर मेरे लिखवाने पर मजबूरन न हो।

ये तमाम अश्या सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने बाद ए वफ़ात फातेहा के

Scanned by CamScanner

लिए अगर मयस्सर हो तो फातेहा में शामिल करने के लिए तजवीज़ फ़रमाई, लेकिन ये इलज़ाम लगाना की ये अशया सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने खुद के लिए तजवीज़ फ़रमाई ये कहाँ तक सच है अईय्ये इस पर नज़र डाले।

क्या सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैहि ने ये अशया खुद के लिए तजवीज़ की थी?

ये सरकार आला हज़रत पर खुला बोहतान है क्योंकि इसी वसाया शरीफ में इससे पहले ही ये वसीयत फार्माई थी-
फातेहा के खाने से गनिया'अ को कुछ न दिया जाए, सिर्फ फ़ुक़रा को दें और वह भी एअजाज़ और खातिर दारी के साथ, न की झिड़क कर, गरज़ कोई बात खिलाफ ए सुन्नत न हो।
ये थी गुरबा और फ़ुक़रा के साथ मुहब्बत अपनी रुखसत के वक़्त भी गरीब व फ़ुक़रा का ख़याल है। और ये है वहाबियों की खयानत दारी हर आन सिर्फ झूठ का सहारा ले कर उस

Scanned by CamScanner

हस्ती को बदनाम करने की कोशिश करना जिसने इनके छुपे हुवे कुफ्रिया अक़ीदों को खोल कर रख दिया अफ़सोस उन लोगों पर जो बिना हक़ीक़त जाने बोहतान बाज़ी से बाज़ नहीं आते।

क्या किसी के या खुद ही के खाने की फ़िक्र करना पेट पूजा है?

पूजा यानि हिन्दुओ की इबादत का तरीका। अगर खाने की फ़िक्र करना वहाबियों के नज़दीक पेट पूजा (शिर्क) है तो इस पूजा से कोन खाली है? जवाब है कोई नहीं किसी पर पूजा का बोहतान लगाने से वह खुद उस फ़ैल को अंजाम देने पर उस फतवे की ज़द से कैसे बच सकता है बिलकुल नहीं बच सकता। लिहाज़ा वहाबियों का यूँ कहना की अपने पेट पूजा का ख़याल है खुद उनको भी वेसे ही पुजारी बनाता है जैसे तमाम मुस्लेमीन को पुजारी बनाता है। लिहाज़ा चाहिय्ये की तमाम मुसलमानो पर इस बोहतान लगाने वालों से

Scanned by CamScanner

बचा जाए। एसो से उम्मीद भी क्या की जा सकती है जो दज्ल व फरेब के साथ इलज़ाम आइद करते है और जब खुद की पोल खुलती है तो बेजा तावील पेश करते है अल्लाह ताला ऐसे मक्कार फरेबियों से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए। आमीन

देवबंदी हज़रात ऐसे इल्ज़ामात से पहले अपने घर की भी खबर ले लेते,
अल इफ़ाज़तुल योमिया में इनके हकीमुल उम्मत अशरफ अली थानवी साहब लिखते है,
गौस अली शाह बड़े हकीम और ज़रीफ़ थे उनके सामने दूसरे को दुवा की के ईमान की सलामती और आक़ीबत ब खेर हो, मोलवी साहब ने पुछा भाई इसकी हक़ीक़त भी मालूम है, कहा आपही बता दें, फ़रमाया ईमान की सलामती तो ये है की पेट भर खाना मिल जाये, और अक़ीबत की खेरियत ये है की खुल कर पाखाना हो जाए बस यही बड़ी नेमत है।
(मलफुजात ए हकीमुल उम्मत पेज नं 526)
ऐसे बदबूदार मज़हब के मोलवियों से और कोई

Scanned by CamScanner

क्या उम्मीद की जा सकती है। यही सब छुपाने के लिए झूठे इलज़ाम लगा कर अवाम को गुमराह किया जा रहा है। एक और अशरफ अली साहब का क़ोल पेशे नज़र है-

फ़रमाया की दावत और हदये में, में हलाल व हराम को ज़्यादा नहीं देखता क्योंकि में मुत्तक़ी नहीं।

(कमालात ए अशरफिया सफा 378)

ऐसे कई पेट के वाकिए थानवी साहब के मौजूद है जिसमे अपनी दावतों के ताल्लुक़ से बातें बाताई कहिये जो शख्स दावत व हदये में हलाल हराम का तमीज़ नहीं रखता क्या वह हकीमुल उम्मत और मुजद्दिद कहलाने के लाईक है हर्गिज़ नहि। और जिन्हें अपने घर की खबर न हो वह दूसरो पर दगा बाज़ी कर बोहतान बांध कर कुछ साबित नहीं कर सकते इन सब से इनके झूठ और हसद व बुग्ज़ ही ज़ाहिर होगा।

अल्लाह ताला ऐसे अजहलो पेट के मारो से हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए।

Scanned by CamScanner

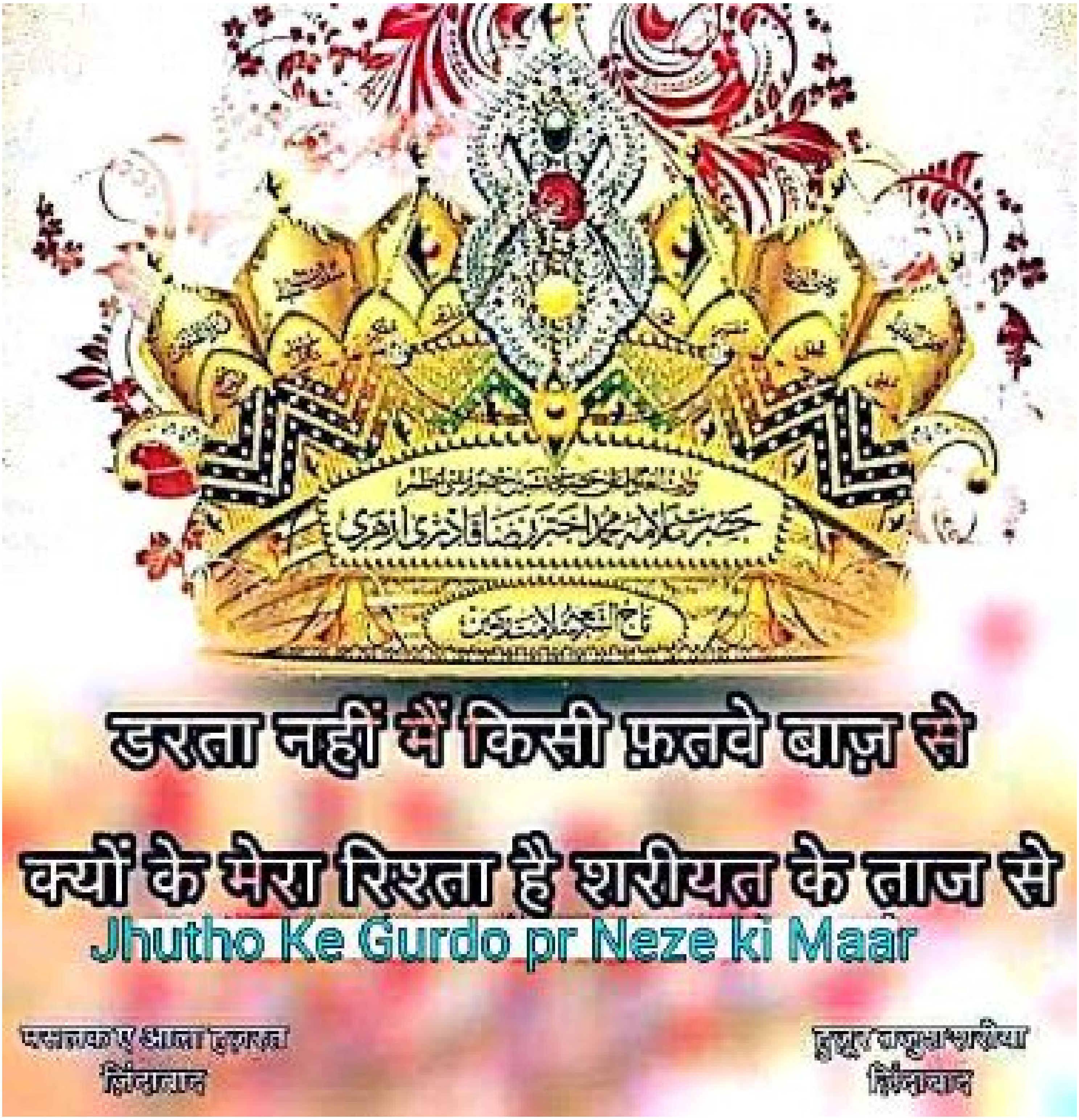

Scanned by CamScanner